कोटद्वार, रविवार
22 दिसम्बर 2024
वर्ष: 46
अंक: 226 पृष्ठ: 4
मूल्य: 2.00
RNI No.UTTHIN/2005/16338

जयन्त

निर्भीक – निष्पक्ष – जनसरोकार

www.dainikjayantnews.com
स्थापित 1979
संस्थापक: स्व. नरेन्द्र उनियाल

डाक पंजीयन पी.ए.ओ.07-2024-26 फोन: 9412081969 email: nagendra.uniyal@gmail.com

एक नजर

कोर्ट कर्मी की हत्या में पत्नी समेत तीन को उम्रकैद

काशीपुर। प्रथम अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश ने कोर्ट कर्मी की हत्या करने के मामले में तीन दोषियों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। अदालत ने दोषियों पर 50–50 हजार रूपये का जुर्माना भी डाला है। साक्ष्य छिपाने के आरोप में भी अदालत ने उन्हें सात साल की सजा सुनाई है। कुंडा के तत्कालीन ग्राम प्रधान मो. हनीफ की सूचना पर कुंडा थाना पुलिस ने 15 जनवरी 2019 की सुबह ज्वाल्पा पेट्रोल पंप के पास से एक व्यक्ति का शव बरामद किया था। मृतक की शिनाख्त सरवरखेड़ा निवासी विनोद कुमार के रूप में हुई। वह रुद्रपुर जिला न्यायालय में चतुर्थ श्रेणी के पद पर कार्यरत था। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में विनोद की मौत धारदार हथियार से वार करने के कारण होना बताई गई थी। मृतक के फुफेरे भाई जसपुर खुर्द निवासी दुष्याल सिंह ने कुंडा थाने में हत्या का मुकदमा दर्ज कराया था। 17 जनवरी 2019 को पुलिस ने विनोद हत्याकांड का खुलासा करते मृतक की पत्नी रजनी समेत तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया था। सरवरखेड़ा निवासी नफीस उर्फ बबलू से रजनी के प्रेम संबंध थे। नफीस आंध्रप्रदेश के मल्हौर में एक ब्यूटी पार्लर पर बार्बर था। आरोपियों ने वारदात को दुर्घटना का रूप देने के लिए उसका शव सड़क किनारे फेंक दिया था। तत्कालीन थाना प्रभारी सुधीर कुमार ने आरोपियों के खिलाफ कोर्ट में चार्जशीट पेश की। अभियोजन पक्ष की ओर से 15 गवाह परीक्षित कराए गए। सभी ने अभियोजन के कथानक का समर्थन किया।

अज्ञात वाहन की चपेट में आकर होटल कर्मी की मौत

काशीपुर। जसपुर मार्ग पर शनिवार को अज्ञात वाहन की चपेट में आकर होटल में काम करने वाले युवक की मौत हो गई। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम कराया। शुक्रवार रात कुंडा थाना क्षेत्र स्थित फोरलेन जसपुर के गांव संन्यासियों वाला निवासी 39 वर्षीय राम बहादुर सिंह पुत्र श्रीराम बाइक से अफजलगढ़ रोड स्थित अमृत होटल पर काम करने जा रहा था। जसपुर मार्ग पर नहर के पास स्थित संधू होटल के पास अज्ञात वाहन चालक ने उसकी बाइक को टक्कर मार दी। हादसे में रामबहादुर गंभीर रूप से घायल हो गया। सूचना पर पहुंचे परिजन पहले उसे जसपुर स्थित सरकारी अस्पताल ले गए। बाद में उसे काशीपुर स्थित एक निजी अस्पताल लाया गया। जहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। घटना से परिवार में कोहराम मच गया।

भारत को मिलेगा ब्रह्मास्त्र' ?

दुश्मनों के लिए 'पाताललोक' का रास्ता, चीन–पाकिस्तान की आएगी शामत

विशाखापट्टनम । भारत की नौसेना के लिए एक महत्वाकांक्षी परियोजना प्रोजेक्ट 75 धीरे–धीरे आकार ले रही है, जो भारतीय पनडुब्बी बेड़े को अत्याधुनिक बनाने का लक्ष्य रखती है। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य एयर इंडिपेंडेंट प्रोपल्शन तकनीक से लैस पनडुब्बियां विकसित करना है, जो भारतीय नौसेना की समुद्री युद्ध क्षमता को बढ़ा सकती हैं। इस तकनीक के कारण भारत की पनडुब्बियां बिना सतह पर आए लंबे समय तक पानी के भीतर रह सकेंगी, जिससे वे दुश्मन से पूरी तरह से छिपी रहेंगी और गुप्त मिशनों को बेहतर तरीके से अंजाम दे सकेंगी। एआईपी तकनीक का उद्देश्य पनडुब्बियों को बिना सतह पर आने की आवश्यकता के लंबे समय तक पानी के नीचे रहने की क्षमता प्रदान करना है। पारंपरिक डीजल–इलेक्ट्रिक पनडुब्बियां समुद्र के नीचे अपने बैटरियों को रिचार्ज करने के लिए अक्सर सतह पर आती हैं, जिससे उनकी उपस्थिति को महसूस किया जा सकता है। वहीं, एयर इंडिपेंडेंट प्रोपल्शन

तकनीक से लैस पनडुब्बियां सप्ताहों तक बिना सतह पर आए समुद्र के भीतर रह सकती हैं। इससे इनकी गुप्तता और युद्धक्षमता में इजाफा होता है। इसके अतिरिक्त, एयर इंडिपेंडेंट प्रोपल्शन से लैस पनडुब्बियां अपने शोर को कम करके दुश्मन को अपनी उपस्थिति का पता नहीं चलने देतीं। यह तकनीक पनडुब्बियों को टोही और गुप्त मिशनों में बेहद प्रभावी बना देती है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, एयर इंडिपेंडेंट प्रोपल्शन तकनीक से लैस पनडुब्बियां बिना सतह पर आए 50,000 घंटे तक पानी में रह सकती हैं और बिना किसी शोर के अपने लक्ष्यों तक पहुंच सकती हैं, जिससे उनका टारगेट करना लगभग असंभव हो जाता है।

परियोजना 75 का महत्व

भारत की परियोजना 75 की परिकल्पना ने भारतीय नौसेना के भविष्य को पूरी तरह से बदलने की दिशा में एक अहम कदम उठाया है। इस परियोजना के तहत, भारत के पास 6 डीजल–इलेक्ट्रिक, 6 एयर इंडिपेंडेंट प्रोपल्शन संचालित और 6 परमाणु हमला करने वाली पनडुब्बियां होंगी। यह भारत के पनडुब्बी बेड़े को और अधिक शक्तिशाली बना देगा और उसे समंदर में एक मजबूत और प्रभावी शक्ति बना देगा। मौजूदा वक्त में भारत के पास 17 डीजल–इलेक्ट्रिक पनडुब्बियां और एक परमाणु पनडुब्बी है, लेकिन यह संख्या बहुत कम है अगर इसे वैश्विक संदर्भ में देखा जाए। भारत का उद्देश्य परियोजना 75क को पूरा करके अपनी समुद्री शक्ति को और बढ़ाना है.

43 साल बाद ऐतिहासिक यात्रा: पीएम मोदी का कुवैत पहुंचने पर गर्मजोशी से स्वागत

नई दिल्ली । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शनिवार को दो दिवसीय यात्रा पर कुवैत पहुंचे, जो किसी भी भारतीय प्रधानमंत्री की 43 वर्षों में पहली कुवैत यात्रा है। इस ऐतिहासिक दौरे पर उन्होंने कुवैती नेतृत्व और भारतीय समुदाय से मुलाकात की। कुवैत पहुंचने पर प्रधानमंत्री का गर्मजोशी से स्वागत किया गया। कुवैत के प्रथम उप प्रधानमंत्री, रक्षा और आंतरिक मंत्री शेख फहद यूसुफ सउद्द अल–सबा ने उनका स्वागत किया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री मोदी को अरबी भाषा में अनुवादित महाभारत और रामायण की प्रतियां उपहार में दी गईं। महाभारत और रामायण का अनुवाद करने वाले अब्दुल्ला बैरन और उनके प्रकाशक अब्दुललतीफ अलनेसेफ ने प्रधानमंत्री मोदी को ये ऐतिहासिक ग्रंथ भेंट किए। पीएम मोदी ने इस उपहार को सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर का प्रतीक बताते हुए अनुवादकों की सराहना की। प्रधानमंत्री ने दोनों पुस्तकों पर हस्ताक्षर भी किए और इसे अपने लिए अमूल्य क्षण बताया। प्रधानमंत्री ने कुवैत में बसे भारतीय समुदाय से मुलाकात कर उनकी समस्याएं और सुझाव सुने।

महाकुंभ में उत्तराखंड का होगा अपना पवेलियन

प्रयागराज मेला प्राधिकरण ने की नि:शुल्क भूमि आवंटित उत्तराखंड के पंडाल में दिखेगी उत्तराखंडी संस्कृति की झलक

जयन्त प्रतिनिधि।

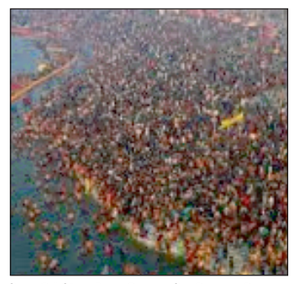

देहरादून : प्रयागराज महाकुंभ-2025 में उत्तराखंड का अपना पवेलियन होगा। प्रयागराज मेला प्राधिकरण ने उत्तराखंड राज्य को सेक्टर-7 कैलाशपुरी मार्ग, पूर्वी पटरी प्रयागराज में 100400 वर्ग फिट भूमि निःशुल्क आवंटित कर दी है। इस भूमि पर उत्तराखंड राज्य का पंडाल सजेगा, जहां मेलार्थियों को उत्तराखंड की समृद्ध संस्कृति की झलक भी देखने को मिलेगी। भूमि आवंटन के लिए मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का आभार प्रकट किया है।

प्रयागराज महाकुंभ-2025 की तैयारियों के जोर पकड़ने के साथ ही उत्तराखंड में भी मेलार्थियों को सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए काम शुरू हो गया है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने महाकुंभ मेले में उत्तराखंड के पंडाल के लिए अलग से भूमि आवंटन का अनुरोध उत्तर प्रदेश सरकार से किया था। सीएम धामी के आग्रह पर यह भूमि आवंटित कर दी गई है। प्रदेश सरकार इस पंडाल में मेलार्थियों के लिए सभी आवश्यक सुविधाओं का प्रबंध करेगी। पंडाल के माध्यम से उत्तराखंड की समृद्ध संस्कृति की झलक भी देश-दुनिया भर से आए मेलार्थियों को देखने को मिलेगी। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने प्रयागराज महाकुंभ के मद्देनजर हाल ही में अधिकारियों के साथ बैठक भी की थी। मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए हैं कि उत्तराखंड से प्रयागराज महाकुंभ में प्रतिभाग करने वाले साधु संतों और अन्य सभी आम लोगों की सुविधाओं का ध्यान रखा जाए।

मेलार्थियों की सुविधा के लिए परिवहन की व्यवस्था भी सरकार करने जा रही है। उल्लेखनीय है कि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की ओर से प्रदेश की कैबिनेट मंत्री बेबी रानी मौर्य और राज्य मंत्री बृजेश सिंह ने देहरादून पहुंचकर राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (सेनि) और मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी को महाकुंभ मेले में विशेष रूप से आमंत्रित किया है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि मां गंगा और यमुना का उद्गम क्षेत्र उत्तराखंड है।

सीएम धामी ने किया दून विश्वविद्यालय में आयोजित गंग धारा–विचारों का अविरल प्रवाह कार्यक्रम में प्रतिभाग

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने शनिवार को दून विश्वविद्यालय, देहरादून में आयोजित गंग धारा–विचारों का अविरल प्रवाह कार्यक्रम में प्रतिभाग किया। इस अवसर पर उन्होंने पहाड़ी उत्पादों पर आधारित स्टालों का अवलोकन किया। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कार्यक्रम हेतु आयोजकों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि इस प्रकार के आयोजन हमारी संस्कृति और परंपराओं को पोषित करने के साथ समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाते हैं। जिस प्रकार गंगा का प्रवाह अविरल है, उसी प्रकार हमारे विचारों का प्रवाह भी गतिमान रहता है। विचारों का प्रवाह हमें

जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। उन्होंने कहा विचारों का आदान–प्रदान सदैव हमारी परंपरा का हिस्सा रहा है। हमारे प्राचीन गुरुकुलों में भी संवाद और चर्चा को शिक्षा का आधार माना गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस कार्यक्रम में भारतीय संस्कृति पर हमें श्रद्धेय स्वामी अवधेशानंद गिरि जी महाराज का मार्गदर्शन प्राप्त होगा।

इस दो दिवसीय व्याख्यान श्रृंखला के दौरान पलायन, शिक्षा, संस्कृति, पर्यावरण जैसे विषयों के साथ हिमालयी क्षेत्रों की धारण क्षमता पर भी विचार–विमर्श किया जाएगा। सभी विषय हमारे राज्य के साथ समस्त हिमालयी क्षेत्र के कल्याण के लिए महत्वपूर्ण हैं। मुख्यमंत्री ने कहा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण और संवर्धन की दिशा में कार्य कर रहा है।

मुख्यमंत्री ने दिए दिल्ली मार्ग पर बसों की उपलब्धता बनाए रखने के निर्देश

देहरादून। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में ग्रैप–4 (ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान) पॉलिसी लागू होने के कारण, दिल्ली में वाहनों के प्रवेश में आ रही दिक्कतों को देखते हुए मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने उत्तराखंड परिवहन निगम को इस रूट पर सार्वजनिक परिवहन सेवाएं सुचारू रखने के निर्देश दिए हैं। इसके बाद परिवहन निगम, बसों का फेरा बढ़ाने के साथ ही नई खरीदी गई बसों का संचालन करते हुए यात्रियों को हर तरह की सेवाएं देने का प्रयास कर रहा है। अपर सचिव परिवहन, नरेंद्र कुमार जोशी ने बताया कि उत्तराखण्ड परिवहन निगम की बीएस–3 एव बीएस–4 बसों के नई दिल्ली में प्रवेश के रोक के दृष्टिगत उत्तराखण्ड परिवहन निगम ने मुख्यमंत्री के निर्देश के क्रम में कई कदम उठाए हैं। वर्तमान में उत्तराखण्ड परिवहन निगम के पास 185 सीएनजी बसें उपलब्ध हैं, जिन्हें दिल्ली मार्ग पर संचालित किया जा रहा है।

अरविंद केजरीवाल का एक और चुनावी एलान

दलित छात्रों के लिए की छात्रवृत्ति योजना की घोषणा

नई दिल्ली । आम आदमी पार्टी (आप) ने दिल्ली विधानसभा चुनाव से पहले दलित समाज के लिए बड़ी घोषणा की है। आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने डॉ. आंबेडकर सम्मान स्कॉलरशिप योजना का एलान किया है।

इससे पहले भी आप कई लोकलुभावन योजना की घोषणा कर चुकी है। जिसमें बुजुर्गों के लिए संजीवनी योजना और ऑटोवालों को पांच बड़ी गारंटी, महिला सम्मान योजना आदि शामिल हैं। दिल्ली में जनता को संबोधित करते हुए आप संयोजक केजरीवाल ने डॉ. आंबेडकर सम्मान स्कॉलरशिप योजना का एलान किया। उन्होंने कहा कि जो दलित छात्र विदेश में पढ़ना चाहते हैं उनका सारा खर्चा हमारी सरकारी उठाएगी। इसके लिए हम डॉ. अंबेडकर सम्मान स्कॉलरशिप शुरू करेंगे। दलित समाज का कोई भी बच्चा पैसे की कमी के कारण उच्च शिक्षा से वंचित ना रहे, इसके लिए 'डॉ. अंबेडकर सम्मान स्कॉलरशिप' दी जाएगी। दलित समाज के बच्चों का विदेश में पढ़ने का सपना होगा साकार। आप ने डॉ. आंबेडकर सम्मान स्कॉलरशिप योजना का एलान करते हुए भाजपा पर तंज कसा है।

ऊंची महंगाई वास्तविक आय को प्रभावित कर रही

बैलेंस सीट को सुधारना अच्छी बात है। लेकिन मुनाफे और श्रमिकों की आय के बीच संतुलन भी बने रहना चाहिए। यह नहीं रहा, तो अर्थव्यवस्था में पर्याप्त मांग नहीं बचेगी और कॉर्पोरेट उत्पादों की खरीद नहीं होगी।'सरकार के कर्ता–धर्ताओं को अहसास होने लगा है कि भारत की 'ग्रोथ स्टोरी' कहीं अटक गई है। वजह आबादी के बहुत बड़े वर्ग की उपभोग क्षमता में गिरावट है। नतीजतन मांग गिर गई है और उसका असर अब कॉरपोरेट सेक्टर पर भी पड़ रहा है। यह स्थिति बनी रही, तो जीडीपी की तीव्र वृद्धि दर के दावे को कायम रखना कठिन हो जाएगा। वित्त मंत्रालय के मुख्य आर्थिक सलाहकार वी अनंत नागेश्वरन की ताजा चिंता का यही संदर्भ है। पिछले हफ्ते एसोचैम के एक आयोजन में उन्होंने कॉरपोरेट मुनाफे और श्रमिकों की आमदनी के बीच संतुलन बनाए रखने पर जोर दिया। कहा कि कॉरपोरेट का मुनाफा 15 साल के सबसे ऊंचे स्तर पर है। लेकिन इससे हुई आमदनी के ज्यादातर हिस्से का इस्तेमाल कंपनियों ने ऋण चुकाने में किया है। लेकिन कॉरपोरेट मुनाफे की तुलना में कर्मचारियों की तनख्वाह नहीं बढ़ी है। नागेश्वरन ने कहा– 'बैलेंस सीट को बेहतर करना अच्छी बात है। लेकिन कॉरपोरेट मुनाफे और श्रमिकों की आय वृद्धि के बीच संतुलन बने रहना चाहिए। यह अनुपात कायम नहीं रहा, तो अर्थव्यवस्था में पर्याप्त मांग नहीं बचेगी और कॉर्पोरेट उत्पादों की खरीद नहीं होगी।' यह वो बात है, जिस पर अनेक विशेषज्ञ पहले से रोशनी डालते रहे हैं। पिछले कुछ समय से कंपनी अधिकारी और मार्केट एजेंसियां भी इस बात को दो–टूक से कहने लगी हैं कि देश में मध्य वर्ग ढह रहा है। इससे संबंधित ताजा रिपोर्ट मार्केट एजेंसी– कैंटार की आई है। शीर्षक गौरतलब है: इंडिया ऐट क्रॉसरोड्स (चौराहे पर भारत)। कैंटार साउथ एशिया के महानिदेशक सौम्य महंती ने कहा– 'कोरोना के बाद अर्थव्यवस्था में हुआ सुधार व्यावहारिक रूप में 'के' आकार का रहा है, जिसमें मध्य वर्ग पिस गया है।2024 में बड़े दायरे में लोग ने महसूस किया कि वे पहले की तुलना में गरीब हो गए हैं। इसका परिणाम उपभोक्ता विश्वास के गतिरुद्ध होने के रूप में सामने आया है।' कैंटार के मुताबिक अगले वर्ष भी मांग मद्धम ही रहेगी, क्योंकि ऊंची महंगाई वास्तविक आय को प्रभावित कर रही है। अच्छी बात है कि अब सरकारी अधिकारी भी इसे मान रहे हैं। लेकिन क्या उनके पास कोई समाधान भी है?

मुलायमियत न बरती जाए

हरियाणा के महेंद्रगढ़ जिले के कनीना में उन्हाणी गांव के करीब स्कूल बस के पेड़ से टकराने पर छह बच्चों की मौत वाकई दिल कचोटने वाली है। हादसे के वक्त चालक नशे में था। बस में 43 बच्चों समेत एक शिक्षिका भी थी। भिड़ंत इतनी भीषण थी कि 34 छात्र घायल हो गए, जिनमें से नौ आईसीयू में हैं। बस चालक, प्रधानाचार्य और स्कूल सचिव को तत्काल गिरफ्तार कर लिया गया। चालक तेज गति से वाहन चला रहा था, मोड़ पर संतुलन खोने से बच्चे खिड़कियों से बाहर उछल कर गिर गए। मरने वाले छात्र 13 से 16 साल की उम्र वाले हैं। हादसे के बाद प्रशासन और नेताओं ने रस्मादायगी करने में देर नहीं की इस दुर्घटना में पूर्व मंत्री के परिवार का बच्चा भी मारा गया है। दिल दहलाने वाले इस घटना की उच्चस्तरीय जांच कराई जाएगी। साथ ही, विद्यालय पर सख्त कार्रवाई की बात भी हो रही है। पुनः यह बात नहीं की जा रही कि छात्रों की जिंदगी को जोखिम में डालने वालों पर नकेल कैसे डाली जाए। देश भर से कहीं–न–कहीं से इस तरह के हादसों की खबरें आती रहती हैं। स्कूलों के लिए विभिन्न नियम बनाए जाते हैं मगर उनको निर्धारित करने और उन्हें सख्ती से लागू करने वालों को जिम्मेदार नहीं बनाया जाता।थोक के भाव में गली–गली स्कूल खोले जा रहे हैं, उन पर दूर–दराज से बच्चों को लाने–ले जाने की परिवहन व्यवस्था करनी होती है जिसके प्रति बेहद लापरवाही बरती जाती है। जब भी इस तरह के हादसे महानगरों के बाहर होते हैं तो उन्हें उतनी गंभीरता से नहीं लिया जाता। शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय समेत संबंधित अधिकारियों को भी अहसास कराया जाना जरूरी है कि उन्हें घोर लापरवाही बरती है। गैर–जिम्मेदारी सिर्फ मोटी रकम वसूलने वाले निजी विद्यालय ही करते, बल्कि सरकारी स्कूलों की स्थिति और भी खराब है। अभिभावकों के पास प्रायः न्यूनतम अधिकार होते हैं, उनकी शिकायतों की अनसुनी की जाती है। यदि वे सख्ती से किसी तरह की आलोचना करते हैं तो बच्चे के प्रति अनुचित बर्ताव होने की आशंकाएं बढ़ जाती हैं, या उन्हें स्कूल से निलंबित करने की धमकियां दी जाती हैं। हादसे के बाद नये–नये नियम लादने से भी कोई सुधार नहीं होने वाला। मारे गए बच्चों के अभिभावकों की क्षतिपूर्ति तो असंभव है,

अडानी पर आरोप डीप स्टेट की साजिश का प्रोपेगेंडा

हरिशंकर व्यास

भारत पूंजीवाद का नया इतिहास रच रहा है! भारत मानों गौतम अडानी का गिरवी हो गया है! यदि अडानी ग्रुप का कोई भी भंडा फूटे तो वह दुश्मन के 'डीप स्टेट' की साजिश है! उसकी बात करना, उस पर संसद में बहस चाहना विपक्ष का देशद्रोह है। भारत को अस्थिर बनाना है। सीधे प्रधानमंत्री पर हमला है! सत्ता और सत्तारूढ़ पार्टी के खिलाफ साजिश है! दुनिया की नंबर एक महाशक्ति अमेरिका के 'डीप स्टेट' का भारत पर हमला है! इसलिए हम अमेरिका को एक्सपोज करेंगे। अमेरिका से लड़ेंगे।विपक्ष की बोलती बंद करेंगे। विपक्ष, नेता विपक्ष राहुल गांधी, सोनिया गांधी और उस नेहरू–गांधी परिवार को देशद्रोही करार देंगे, जिसने देश को पचास साल चलाया। यह परिवार अमेरिका, उसकी संस्थाओं, उसकी 'डीप स्टेट' का पिू है। ये भारत के जगत सेठ गौतम अडानी के खिलाफ इसलिए बोल रहे हैं क्योंकि इसने अमेरिका और दुनिया के खरबपति पूंजीपतियों को पछाड़ा है।वे भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के व्यक्तित्व–कृतित्व की उस इकलौती उपलब्धि, 140 करोड़ भारतवासियों की आन–बान–शान के विरोधी हैं, जबकि वह सवा सौ करोड़ भूखों के फ्री लंगर की शान है। देश–दुनिया में मोदीजी की आन है, जिससे भारत सोने की चिड़िया बना है। दुनिया में, पूंजीवाद के इतिहास का ऐसा कोई उदाहरण नहीं है जो अडानी का है। इतिहास में नए पुराने जितने खरबपति–अरबपति हुए हैं उनमें आज तक ऐसा एक भी पूंजीपति नहीं हुआ है जिस पर गोलमाल के आरोप लगे और वह राष्ट्र का गौरव बने! उसकी रक्षा के लिए राष्ट्र, सरकार, संसद सब कुरबान हो तथा विपक्ष या विरोधी भ्रष्टाचार का शोर करें तो ससंद में बहस न हो। उलटे विपक्ष को विदेश का पिू करार दिया जाए। मीडिया खबरें न छापे। और अडानी के लिए सरकार, उसके चेहरे सब वैसी ही जनसंपर्क, लॉबी की भूमिका में हों जैसे कभी धीरूभाई अंबानी के लिए दिल्ली में बालू और टोनी किया करते थे।अंबानी पर भी कई बार बवाल हुए। लेकिन मुझे ध्यान नहीं है कि इंदिरा गांधी, प्रणब मुखर्जी या किसी भी सरकार ने धीरूभाई अंबानी को भारत की आन–बान–शान करार दे कर उनके खिलाफ अमेरिका की 'डीप स्टेट' या सीआईए की साजिश बताई हो। या संसद में बहस नहीं होने दी हो। या वाणिज्य, वित्त आदि की किसी भी भूमिका में प्रणब मुखर्जी ने रिलायंस का बचाव किया हो। इसलिए समकालीन इतिहास में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनकी सरकार ने अडानी के लिए देश के विपक्ष, राहुल गांधी–सोनिया गांधी, अमेरिका, 'डीप स्टेट' आदि पर हमले का जो कर्म किया है वह न केवल पूंजीवाद और आजाद भारत के इतिहास की अनहोनी है, बल्कि यह सवाल भी बनाते हुए है कि अडानी पर हल्ला क्या मोदी सरकार की अस्थिरता है? ऐसा कैसे है कि गली–गली में शोर अडानी का है और घबराई हुई सरकार है! इतना ही नहीं भाजपा और उसके प्रवक्ता सब अडानी के कारतूस बने हुए हैं! यदि अमेरिकी

भारत को अस्थिर बनाना है। सीधे प्रधानमंत्री पर हमला है! सत्ता और सत्तारूढ़ पार्टी के खिलाफ साजिश है! दुनिया की नंबर एक महाशक्ति अमेरिका के 'डीप स्टेट' का भारत पर हमला है! इसलिए हम अमेरिका को एक्सपोज करेंगे। अमेरिका से लड़ेंगे।विपक्ष की बोलती बंद करेंगे। विपक्ष, नेता विपक्ष राहुल गांधी, सोनिया गांधी और उस नेहरू–गांधी परिवार को देशद्रोही करार देंगे, जिसने देश को पचास साल चलाया। यह परिवार अमेरिका, उसकी संस्थाओं, उसकी 'डीप स्टेट' का पिू है। ये भारत के जगत सेठ गौतम अडानी के खिलाफ इसलिए बोल रहे हैं क्योंकि इसने अमेरिका और दुनिया के खरबपति पूंजीपतियों को पछाड़ा है। वे भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के व्यक्तित्व–कृतित्व की उस इकलौती उपलब्धि, 140 करोड़ भारतवासियों की आन–बान–शान के विरोधी हैं, जबकि वह सवा सौ करोड़ भूखों के फ्री लंगर की शान है। देश–दुनिया में मोदीजी की आन है, जिससे भारत सोने की चिड़िया बना है। दुनिया में, पूंजीवाद के इतिहास का ऐसा कोई उदाहरण नहीं है जो अडानी का है। इतिहास में नए पुराने जितने खरबपति–अरबपति हुए हैं उनमें आज तक ऐसा एक भी पूंजीपति नहीं हुआ है जिस पर गोलमाल के आरोप लगे और वह राष्ट्र का गौरव बने! उसकी रक्षा के लिए राष्ट्र, सरकार, संसद सब कुरबान हो तथा विपक्ष या विरोधी भ्रष्टाचार का शोर करें तो ससंद में बहस न हो।

'डीप स्टेट', अस्थिरता की साजिश, राहुल–सोनिया देशद्रोही, वित्तीय गोलमाल जैसी बातें हैं तो इसके लिए प्रेस कॉन्फ्रेंस विदेश मंत्री, गृह मंत्री, वित्त मंत्री या राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जैसों को करनी चाहिए या नहीं? अडानी ग्रुप न भाजपा सदस्य है और न आरएसएस का स्वंयसेवक है। और यदि वह चंदा या गुरू दक्षिणा देता भी हो तब भी वैश्विक बदनामी (याद करें और उन रिपोर्टों को पढ़ें, जिनमें अडानी के ठेके को रद्द करते हुए केन्या की संसद ने कैसी तालियां बजाईं तथा लोगों ने भारतीयों पर कैसी टिप्पणियां कीं) की हकीकत में संघ परिवार उसके लिए क्योंकर लाठी ले कर खड़ा होगा? चाल, चेहरे, चरित्र का कोई लोकलाज नहीं? सोचें, अडानी, हिंडनबर्ग रिपोर्ट, हेज फंड मैनेजर 92 वर्षीय सोरोस की तुकबंदी से भाजपा कह रही है कि सबके पीछे उद्देश्य मोदी सरकार को अस्थिर करना है। कांग्रेस नेतृत्व (राहुल गांधी, सोनिया गांधी) देश और अर्थव्यवस्था को अस्थिर करने के लिए जॉर्ज सोरोस के पेरोल पर हैं। भारत के खिलाफ गतिविधियों में अमेरिका के डीप स्टेट का हाथ है। ऐसी कथित भयावह साजिश के बावजूद सरकार से अधिकृत या विदेश मंत्री, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार का एक शब्द नहीं बोलना। अडानी पर आरोप और सीधे अमेरिका की 'डीप स्टेट' की साजिश का प्रोपेगेंडा! जबकि हाल में अमेरिकी अदालत ने खालिस्तानी पन्नू की हत्या की साजिश में भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार, पूर्व रॉ चीफ, रॉ एजेंट व एक कारोबारी को समन जारी किया मगर तब तो सरकार और भाजपा ने एक शब्द इनके बचाव में नहीं बोला।तब अमेरिकी 'डीप साजिश' का हल्ला नहीं था। लेकिन अडानी की ऐसी चिंता जो संसद का पूरा सत्र इसलिए कुरबान क्योंकि राहुल गांधी ने अडानी पर लगे आरोपों पर बहस चाही! अमेरिकी अदालत से अडानी ग्रुप को समन है तो भारत के सुरक्षा प्रमुख अजित डोवाल पर भी अमेरिकी अदालत की कारवाई है। एक का कारोबारी–सिविल मामला है तो दूसरा हत्या की साजिश का फौजदारी मुकद्दमा। सोचें, भारत राष्ट्र–राज्य की आन–बान–शान के लिए कारोबारी–सिविल–भ्रष्टाचार का आरोप अधिक चिंता वाला होना चाहिए या फौजदारी का? प्रधानमंत्री मोदी, सत्तारूढ़ पार्टी को अजित डोवाल एंड पार्टी की रक्षा में संसद में या बाहर यह हल्ला क्या नहीं करना चाहिए था कि अमेरिका की 'डीप स्टेट' भारत के खुफिया प्रमुखों को कटघरे में खड़ा कर भारत को अस्थिर कर रही है? लेकिन ऐसा नहीं हुआ। भारत अडानी की बदनाम गौरव गाथा पर कुरबान है न कि भारत की सुरक्षा के रणबांकुरों (डोवाल एंड पार्टी) का अहसानमंद! इस अंतर से क्या साबित होता है? तभी सोचें, प्रधानमंत्री मोदी के लिए उपयोगी कौन अधिक रहा है? अडानी या डोवाल?

जनसंख्या गिरावट पर मोहन भागवत की चिंता

बलबीर पुंज

संघ प्रमुख ने जिस आशंका को प्रकट किया हैं, उससे सार्वजनिक जीवन में सक्रिय जनप्रतिनिधियों का एक समूह परिचित तो है, लेकिन अपने संकीर्ण राजनीतिक हितों के कारण उसे जनविमर्श का हिस्सा बनाने से न सिर्फ बचता है, बल्कि उसे नया रंग देने का प्रयास भी करता है। आरोप–प्रत्यारोपों को दरकिनार कर क्या हमें हकीकत को नहीं देखना चाहिए? क्या यह सच नहीं कि भारतीय उपमहाद्वीप (भारत सहित) में हिंदुओं की जनसंख्या, मुस्लिमों के अनुपात में लगातार घट रही है?बीते दिनों राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सरसंघचालक मोहन भागवत ने जनसंख्या में गिरावट पर अपनी चिंता व्यक्त की। उनका कहना था, आधुनिक जनसंख्या विज्ञान कहता है कि जब किसी समाज की जनसंख्या (प्रजनन दर) 2.1 से नीचे चली जाती है तो वह समाज पृथ्वी से लुप्त हो जाता हैज् इस तरह अनेक भाषाएं और समाज नष्ट हो गए ज्जनसंख्या विज्ञान का कहना है कि हमें दो या तीन से अधिक बच्चे पैदा करने की आवश्यकता है। समाज को जीवित रखने के लिए संख्या महत्वपूर्ण है।जैसे ही उनका विचार मीडिया की सुर्खियों में आया, वैसे ही स्वयंभू सेकुलरवादी और वामपंथी तिलमिला उठे।

संघ प्रमुख ने जिस आशंका को प्रकट किया हैं, उससे सार्वजनिक जीवन में सक्रिय जनप्रतिनिधियों का एक समूह परिचित तो है, लेकिन अपने संकीर्ण राजनीतिक हितों के कारण उसे जनविमर्श का हिस्सा बनाने से न सिर्फ बचता है, बल्कि उसे नया रंग देने का प्रयास भी करता है।

आरोप–प्रत्यारोपों को दरकिनार कर क्या हमें हकीकत को नहीं देखना चाहिए? क्या यह सच नहीं कि भारतीय उपमहाद्वीप (भारत सहित) में हिंदुओं की जनसंख्या, मुस्लिमों के अनुपात में लगातार घट रही है? क्या मजहब का भारत की एकता–अखंडता और इस राष्ट्र के शाश्वत मूल्यों–बहुलतावाद, लोकतंत्र और सेकुलरवाद के साथ सीधा संबंध है या नहीं? देश में जहां–जहां आज हिंदू अल्पसंख्यक है, उनमें से अधिकतर क्षेत्र क्या अलगाववाद से ग्रस्त नहीं? संघ प्रमुख के विचार पर त्वरित कोई राय बनाने से पहले क्या इन सवालों के जवाब ईमानदारी से खोजने चाहिए।

क्या यह सत्य नहीं कि ब्रिटिशकालीन भारत, जनसांख्यिकीय में आए परिवर्तन के कारण ही विभाजित हुआ था? इस त्रासदी में जिन दो मुल्कों– पाकिस्तान और बांग्लादेश का जन्म हुआ, वह घोषित रूप से इस्लामी है। अपने वैचारिक अधिष्ठान के अनुरूप इन दोनों ही देशों में हिंदू, बौद्ध और सिख आदि अल्पसंख्यकों के लिए न तो कोई स्थान है और न ही उनके मानबिंदु (मंदिर–गुरुद्वारा सहित) सुरक्षित। विडंबना है कि सिंधु नदी, जिसके तट पर हजारों वर्ष पूर्व ऋषि परंपरा से वेदों की रचना हुई– उस क्षेत्र में आज उनका नाम लेने का कोई नहीं बचा है।भारतीय उपमहाद्वीप में सर्वाधिक 'असुरक्षित' कौन है? विश्व के इस भूखंड में कुल मिलाकर 180 करोड़ लोग बसते है, जिसमें भारत 140 करोड़, पाकिस्तान 23 करोड़ और बांग्लादेश की आबादी 17 करोड़ है। 180 करोड़ में 112 करोड़ हिंदू है, जबकि मुस्लिम 62 करोड़ से अधिक मुस्लिम। विभाजन से पूर्व, इस भू–भाग की कुल आबादी में हिंदू–सिख–बौद्ध–जैन अनुयायियों का अनुपात 75 प्रतिशत, तो मुस्लिम अनुपात 24 प्रतिशत था। स्वाधीनता से लेकर आज तीनों देशों में हिंदू–सिख–बौद्ध–जैन घटकर 62 प्रतिशत रह गए है, जबकि मुस्लिम बढ़कर 34 प्रतिशत हो गए। आज हिंदुओं–सिखों–बौद्ध–जैन की जो वास्तविक संख्या 135 करोड़ या उससे अधिक होनी चाहिए थी, वह घटकर 112 करोड़ रह गई है। यक्ष प्रश्न है कि इस भूखंड से पिछले सात दशकों में 23 करोड़ हिंदू–सिख–बौद्ध–जैन कहां गायब हो गए? बात यदि खंडित भारत की करें, तो अरुणाचल प्रदेश में 2001 से 2011 के बीच हिंदुओं की जनसंख्या 5.56त्न तक घट गई है। वर्ष 1971 में इस प्रदेश की कुल जनसंख्या में ईसाई एक प्रतिशत भी नहीं थे, लेकिन वर्ष 2011 में वे 30त्न हो गए। इस दौरान बौद्ध अनुयायियों की संख्या भी घट गई है। असम में 2001 की जनगणनीय तुलना में हिंदू आबादी 2011 में लगभग तीन प्रतिशत घटी है। इस दौरान असम में हिंदू वृद्धि दर लगभग 11त्न, तो मुस्लिम आबादी 29त्न रही। प.बंगाल में भी हिंदुओं की वृद्धि दर तेजी से घट रही है। केरल में हिंदू जनसंख्या गत 100 वर्षों में 14 प्रतिशत घट चुकी है।स्वतंत्रता से पहले नागालैंड और मिजोरम– दोनों आदिवासी बहुल क्षेत्र थे। दिलचस्प तथ्य है कि वर्ष 1941 में नागालैंड की कुल आबादी में जहां ईसाई लगभग शून्य थे, तो मिजोरम में ईसाई आबादी आधा प्रतिशत भी नहीं थी। परंतु वह एकाएक 1951 में बढ़कर क्रमशः 46 और 90 प्रतिशत हो गए। 2011 की जनगणना के अनुसार, दोनों राज्यों की कुल जनसंख्या में ईसाई क्रमशः 88 और 87 प्रतिशत है। मेघालय की भी यही स्थिति है। इसी जनसांख्यिकीय स्थिति के कारण इन राज्यों में चर्च का अत्याधिक प्रभाव है।

बढ़ता डिजिटल सेवा निर्यात

अशोक शर्मा

इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना तकनीक से संबंधित वस्तुओं के बढ़ते निर्यात के साथ–साथ भारत डिजिटल माध्यम से मुहैया करायी गयीं सेवाओं के निर्यात में भी वैश्विक बाजार में अपनी हिस्सेदारी बढ़ा रहा है। विश्व व्यापार संगठन द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार 2023 में भारत ने 257 अरब डॉलर मूल्य के ऐसी सेवाओं का निर्यात किया है, जो 2022 की तुलना में 17 प्रतिशत अधिक है। इस क्षेत्र में भारत जर्मनी और चीन को पीछे छोड़ते हुए चौथे स्थान पर आ गया है। अब भारत से आगे केवल अमेरिका, ब्रिटेन और आयरलैंड हैं। डिजिटल माध्यम से सेवा मुहैया कराने का अर्थ यह है कि कंप्यूटर नेटवर्क का इस्तेमाल कर शिक्षा, गेमिंग, मनोरंजन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आदि के लिए दक्ष ऑपरेटर, कुशल प्रोग्रामर और कोडिंग विशेषज्ञ अपनी सेवाएं देते हैं। वैश्विक सेवा व्यापार में डिजिटल माध्यम से मुहैया करायी जाने वाले सेवाओं का हिस्सा अब 20 फीसदी से भी ज्यादा हो गया है। यह आंकड़ा 2005 में 14 प्रतिशत था। वस्तुओं के निर्यात में कई कारणों– भू–राजनीतिक तनाव, हिंसक संघर्ष, आपूर्ति श्रृंखला में अवरोध, मुद्रास्फीति में वृद्धि, मांग में कमी आदि– से बीते वर्षों में उतार–चढ़ाव होता रहा है। हालांकि इस वर्ष बेहतरीन की उम्मीद जतायी जा रही है, लेकिन आशंकाएं भी बनी हुई हैं।

इस रुझान के उलट कोरोना महामारी के दौर से पहले के तुलना में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर डिजिटल सेवाओं का निर्यात अभी 50 प्रतिशत से अधिक के स्तर पर है। इस क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा भी बहुत है क्योंकि कई देश सॉफ्टवेयर, प्रोग्रामिंग, कोडिंग आदि डिजिटल क्षमताओं को बढ़ाने में जुटे हैं। अनेक देश ऐसी सेवाओं के आयात करने के बजाय अपने देश में इन्हें विकसित कर रहे हैं, भले ही उनकी गुणवत्ता कमतर हो। फिर इन सेवाओं से डाटा सुरक्षा और संग्रहण के मुद्दे भी जुड़े होते हैं। ऐसी स्थिति में भारत से डिजिटल सेवा निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि से यह इंगित होता है कि इन सेवाओं की गुणवत्ता और दक्षता उत्कृष्ट है तथा सुरक्षा को लेकर भी भारतीय सेवा प्रदाताओं पर भरोसा बढ़ा है। बीते वित्त वर्ष में अप्रैल 2023 से फरवरी 2024 के बीच भारत से वस्तुओं और सेवाओं का कुल निर्यात 709 अरब डॉलर से अधिक रहा है तथा इस अवधि में हमारा कुल आयात 782 अरब डॉलर से ज्यादा हुआ है। हाल के वर्षों में भारत सरकार ने आर्थिक सुधारों, नीतिगत पहलों तथा प्रोत्साहन कार्यक्रमों के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण उत्पादन तथा निर्यात बढ़ाने को अपनी प्राथमिकताओं में शामिल किया है। घरेलू बाजार में भी देशी उत्पादों को बढ़ावा दिया जा रहा है।

द रोशंस की रिलीज तारीख से उठा पर्दा, 17 जनवरी से नेटफ्लिक्स पर दिखेगी तीन पीढ़ियों की विरासत

ऋतिक रोशन, राकेश रोशन और राजेश रोशन जल्द ही एक बेहद खास प्रोजेक्ट में एक साथ नजर आने वाले हैं। कुछ समय पहले ही नेटफ्लिक्स की बहुप्रतीक्षित डॉक्यूमेंट्री सीरीज द रोशंस की घोषणा की गई थी, जो रोशन परिवार की फिल्म इंडस्ट्री में कई पीढियों की विरासत को दर्शाएगी। अब एक नए पोस्टर के साथ इस डॉक्यूमेंट्री सीरीज की रिलीज डेट का भी एलान कर दिया गया है।नेटफ्लिक्स के इंस्टाग्राम हैंडल पर द रोशंस का नया पोस्टर शेयर किया गया। इस पोस्टर में ऋतिक रोशन, राकेश रोशन और राजेश रोशन एक साथ बैठे हुए दिख रहे हैं, जबकि उनके पीछे दिवंगत रोशन लाल नागरथ की तस्वीर है। पोस्ट के कैप्शन में डॉक्यूमेंट्री सीरीज से क्या उम्मीद की जा सकती है, यह बताया गया

है और रिलीज डेट का भी खुलासा किया गया है।पोस्ट के कैप्शन में लिखा है, लाइट्स, कैमरा, फैमिली! संगीत, फिल्मों और एक ऐसे रिश्ते के माध्यम से द रोशंस की दुनिया में डूब जाइए जो विरासत को परिभाषित करता है। देखिए द रोशंस, 17 जनवरी को केवल नेटफ्लिक्स पर।

पोस्ट पर फैंस की खुशी थमने का नाम नहीं ले रही थी। एक व्यक्ति ने लिखा, बहुत ज्यादा एक्साइटेड हूं! काउंटडाउन शुरू हो चुका है, जबकि दूसरे ने लिखा, ह्यद रोशन्सह्न की विरासत देखने के लिए एक्साइटेड हूं। एक और कमेंट में लिखा गया, भारतीय फिल्म इंडस्ट्री के महान लोगों पर प्रेरणादायक डॉक्यूमेंट्री देखने का इंतजार है। 17 जनवरी – तारीख सेव कर ली। कई अन्य फैंस ने रेड हार्ट और फायर इमोजी के साथ अपनी भावनाएं व्यक्त कीं।

द रोशंस का निर्देशन शशी रंजन ने किया है। सूत्रों के मुताबिक इस डॉक्यूमेंट्री सीरीज में बॉलीवुड के कई सितारों के इंटरव्यू भी होंगे, जिन्होंने रोशन परिवार के साथ काम किया है। राकेश रोशन ने इस साल की शुरुआत में शाहरुख खान का द रोशंस में योगदान के लिए धन्यवाद किया था।

पीएफ धोखाधड़ी के आरोपों के बाद पूर्व क्रिकेटर रॉबिन उथप्पा के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी

नईदिल्ली, पूर्व भारतीय क्रिकेटर रॉबिन उथप्पा से जुड़ी एक बड़ी खबर सामने आ रही है. उनके खिलाफ अरेस्ट वॉरंट जारी हुआ है. उथप्पा पर पीएफ फंड घोटाले का आरोप लगाया गया है, जिसके बाद पुलिस उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई करेगी, क्योंकि क्षेत्रीय पीएफ आयुक्त सदाक्षरी गोपाल रेड्डी ने इसके निर्देश दिए हैं. वारंट पीएफ क्षेत्रीय आयुक्त शदाक्षरी गोपाल रेड्डी ने जारी किया, जिन्होंने पुलकेशिनगर पुलिस को आवश्यक कार्रवाई करने का निर्देश भी दिया. सेंचुरीज़ लाइफस्टाइल ब्रांड प्राइवेट लिमिटेड नामक एक प्राइवेट कंपनी का मैनेज करने वाले उथप्पा पर कर्मचारियों के वेतन से पीएफ अंशदान काटने और उनके खातों में पैसे ना डालने का आरोप है. रॉबिन उथप्पा पर 23 लाख रूपये के घोटाले का आरोप है. मिली जानकारी के मुताबिक, उन्होंने अपने कर्मचारियों की सैलरी से पीएफ के नाम से पैसे काटे, लेकिन उनके अकाउंट में ट्रांसफर ही नहीं किए. 4 दिसंबर को लिखे पत्र में, आयुक्त रेड्डी ने पुलिस को गिरफ्तारी वारंट को जारी करने का निर्देश दिया. हालांकि, वारंट को पीएफ कार्यालय में वापस कर दिया गया .

अश्विन के संन्यास पर जडेजा ने कहाः आखिरी क्षण में पता चला

मेलबर्न, भारत के ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा ने खुलासा किया कि कैसे रविचंद्रन अश्विन के अचानक संन्यास ने प्रशंसकों और टीम के साथियों को चौंका दिया। उन्होंने कहा कि उन्हें सार्वजनिक घोषणा से कुछ क्षण पहले ही इसके बारे में पता चला। जडेजा ने मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड (एमसीजी) में संवाददाताओं से कहा, मुझे आखिरी क्षण में संन्यास के बारे में पता चला। प्रेस कॉन्फ्रेंस से पांच मिनट पहले। यह चौंकाने वाला था। उन्होंने कहा, हमने पूरा दिन साथ बिताया, और उसने मुझे संकेत भी नहीं दिया। हम सभी जानते हैं कि अश्विन का दिमाग कैसे काम करता है (हंसते हुए)। अश्विन और जडेजा एक दशक से अधिक समय से टेस्ट क्रिकेट में भारत के गेंदबाजी

आक्रमण की आधारशिला रहे हैं। एक साथ 58 टेस्ट खेलते हुए, उन्होंने एक शानदार स्पिन जोड़ी बनाई, जिसके बीच 587 विकेट लिए। उनकी साझेदारी ने अनिल कुंबले और हरभजन सिंह की दिग्गज जोड़ी को पीछे छोड़ दिया, जिन्होंने 501 विकेट लिए थे।अश्विन का संन्यास चौंकाने वाला है, लेकिन भारतीय क्रिकेट में बदलाव का संकेत भी है। जडेजा ने अपने गेंदबाजी साथी के जाने से पैदा हुए खालीपन को स्वीकार किया, लेकिन युवा खिलाड़ियों के लिए खुलने वाले अवसरों के बारे में आशावादी विचार भी व्यक्त किया।उन्होंने कहा, हम इतने सालों से गेंदबाजी साथी रहे हैं। हम एक–दूसरे के पूरक रहे हैं। हम बल्लेबाजों के खिलाफ योजना बनाते थे। मुझे बहुत सी चीजें याद आएंगी। हालांकि, उन्होंने जल्दी ही भविष्य पर ध्यान केंद्रित कर लिया। उम्मीद है कि कोई बेहतर स्पिनर और ऑलराउंडर अश्विन की जगह लेगा। भारत में हमेशा अच्छी प्रतिभा होती है और कोई भी अपूरणीय नहीं है।

टीवी एक्ट्रेस दीपिका ने शुरू की शूटिंग, जल्द ही साझा करेंगी क्या नया कर रही हैं?

दीपिका कक्कड़ टीवी सीरियल ससुराल सिमर का के जरिए दर्शकों के बीच मशहूर हुई थी। इसके अलावा भी उन्होंने कई हिट टीवी सीरियल्स में काम किया। टीवी एक्टर शोएब इब्राहिम से शादी के बाद वह अपनी फैमिली लाइफ में व्यस्त हो गई। उनका एक छोटा बेटा भी है, जिसकी परवरिश में वह अपना पूरा समय देती हैं। लेकिन टीवी सीरियल में काम ना करने के बावजूद भी वह लाइमलाइट में बनी रहती हैं। दीपिका टीवी सीरियल में एक्टिव ना होने के बावजूद भी, दर्शकों के बीच अपनी जगह बनाए हुए हैं। दरअसल, वह अपना एक व्लॉग चैनल यूट्यूब पर चलाती हैं। इस चैनल का नाम ह्यदीपिका की दुनियाह्न है।

इसमें वह अपने हर दिन का हाल दर्शकों के साथ साझा करती हैं। उनके इस चैनल पर लगभग 3 मिलियन फॉलोअर हैं। हाल ही में अपने व्लॉगिंग चैनल पर ही दीपिका कक्कड़ ने बताया कि वह जल्द ही एक दर्शकों को एक खास प्रोजेक्ट में नजर आएंगी। इसी व्लॉग में वह शूटिंग वाली जगह पर भी नजर आईं। शूटिंग पर उनका बेटा भी साथ में मौजूद था। दीपिका ने कहा कि वह जल्द ही बताएंगी कि किस प्रोजेक्ट का हिस्सा बन रही हैं। दीपिका के यूट्यूब चैनल पर अच्छी खासी फैन फॉलोइंग है लेकिन उन्हें अकसर ट्रोलिंग का शिकार भी होना पड़ता है। अकसर कुछ सोशल मीडिया यूजर्स दीपिका कक्कड़ और उनके पति शोएब इब्राहिम को उनके रहन–सहन और पहनावे को लेकर ट्रोल कर देते हैं।

वनवास का नया गाना छबीली के नैना जारी, नाना पाटेकर ने खुद गाया

हिंदी सिनेमा के जाने–माने निर्देशक अनिल शर्मा पिछले काफी समय से अपनी आगामी फिल्म वनवास को लेकर सुर्खियां बटोर रहे हैं।इस फिल्म में उनके बेटे और अभिनेता उत्कर्ष शर्मा मुख्य भूमिका में नजर आएंगे। दिग्गज अभिनेता नाना पाटेकर भी इस फिल्म अहम हिस्सा हैं। वनवास को आज 20 दिसंबर को सिनेमाघरों में रिलीज किया जाएगा।रिलीज से एक दिन पहले अब निर्माताओं ने फिल्म का नया गाना छबीली के नैना जारी कर दिया है। खास बात यह है कि वनवास के नए गाने छबीली के नैना को पाटेकर ने खुद गाया है।

केएल राहुल के साथ कौन करेगा ओपनिंग? खतरनाक होने वाली है दिल्ली कैपिटल्स की जोड़ी

नईदिल्ली, आईपीएल 2025 मेगा ऑक्शन में केएल राहुल को दिल्ली कैपिटल्स ने 14 करोड़ रुपये में खरीदकर अपने साथ जोड़ लिया. हालांकि, अब तक फ्रेंचाइजी ने इस बात की आधिकारिक घोषणा नहीं की है की केएल ही टीम के कप्तान बनेंगे. मगर, ये बात तो तय है की केएल अपकमिंग सीजन में दिल्ली के लिए कप्तानी करते नजर आएंगे. लेकिन, सवाल ये है की केएल के साथ ओपनिंग करने कौन आएगा? आइए आपको केएल के ओपनिंग पार्टनर के बारे में बताते हैं. भारतीय स्टार क्रिकेटर केएल राहुल आईपीएल 2025 में दिल्ली कैपिटल्स की

जर्सी में नजर आने वाले हैं. जहां, जाहिर तौर पर एक बार फिर वह पारी की शुरुआत करने मैदान पर उतरेंगे. केएल एक शानदार ओपनर हैं, जो कंसिस्टेंसी के साथ रन बनाने के लिए जाने जाते हैं. लेकिन, लोगों के मन में सवाल है की केएल के साथ पारी की शुरुआत कौन करेगा? यदि आप भी इसका जवाब तलाश रहे हैं, तो आपको बता दें दिल्ली ने आरटीएम कार्ड का इस्तेमाल करते हुए जेक फ्रेसर मैकगर्क को अपने साथ वापस जोड़ा. इस खिलाड़ी का केएल के साथ ओपन करना तय माना जा रहा है, क्योंकि उन्होंने पिछले सीजन भी तूफानी शुरुआत दिलाई थीं. जेक फ्रेजर–मैकगर्क ने पिछले सीजन ही दिल्ली कैपिटल्स का हिस्सा रहते हुए अपना आईपीएल डेब्यू किया. फ्रेंचाइजी ने कुल 9 मैच खेले हैं, जिसमें उन्होंने 36.67 के औसत और 234.04 की खतरनाक स्ट्राइक रेट से 330 रन बनाए हैं.

एक नजर

पूरी मजबूती से नगर निगम का चुनाव लड़ेगी आप

जयन्त प्रतिनिधि। कोटद्वार : आम आदमी पार्टी ने पूरी मजबूती के साथ नगर निगम का चुनाव लड़ने का निर्णय लिया है। कहा कि महापौर के साथ ही चालीस वार्डों पर अपने प्रत्याशियों को उतारा जाएगा।

गोविंदनगर स्थित कार्यालय में बैठक का आयोजन किया गया। लीगल विंग के प्रदेश अध्यक्ष अरविंद वर्मा ने कहा कि जन हितों को लेकर आम आदमी पार्टी समय-समय पर अभियान चलाती रहती है। ऐसे में अब पार्टी को चुनावी मैदान में कूदकर नेतृत्व करने की आवश्यकता है। कहा कि पार्टी ने नगर निगम चुनाव में महापौर के साथ ही अन्य पार्षदों के पदों पर अपने प्रत्याशी उतारे का निर्णय लिया है। हम सभी को एकजुट होकर प्रत्याशियों को जितवाने के लिए कार्य करना चाहिए। इस मौके पर जिला अध्यक्ष कोटद्वार सुबोध ममगाईं, उपाध्यक्ष जीवन जलाल, महासचिव भास्कर बुडाकोटी, महासचिव प्रवीन थपलियाल, भाबर मंडल अध्यक्ष जसपाल रावत आदि मौजूद रहे।

भर्ती पूर्व प्रशिक्षण शिविर 4 जनवरी से

जयन्त प्रतिनिधि। पौड़ी : पूर्व सैनिकों, सैनिक विधवाओं के पुत्रों को सेना, अर्द्धसैनिक बलों व पुलिस बल में भर्ती पूर्व प्रशिक्षण' शिविर का आयोजन आगामी 4 जनवरी से 25 फरवरी 2025 तक देहरादून में किया जायेगा

जिला सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास अधिकारी, लैंसडौन कर्नल ओमप्रकाश फरस्वाण (अ0 प्रा0) ने जानकारी देते हुए बताया कि राज्य सरकार की भर्ती पूर्व प्रशिक्षण योजना के अन्तर्गत वित्तीय वर्ष 2024-25 हेतु 'पूर्व सैनिकों, सैनिक विधवाओं के पुत्रों को सेना, अर्द्धसैनिक बलों व पुलिस बल में भर्ती पूर्व प्रशिक्षण' कार्यक्रम राज्य सैनिक विश्राम गृह 25-सी, कालीदास मार्ग, हाथीबड़कला देहरादून में संचालित किया जायेगा। कर्नल फरस्वाण ने बताया कि प्रशिक्षण संख्या 97, आगामी 04 जनवरी से 27 फरवरी, 2025' तक संचालित किया जाएगा। प्रशिक्षण हेतु इच्छुक अभ्यर्थी 28 दिसंबर, 2024 तक अपने आवेदन पत्र भरकर जिला सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास कार्यालय लैंसडौन अथवा सीधे जिला सैनिक कल्याण पुनर्वास कार्यालय देहरादून को भेज सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए मोबाइल नंबर '8439258647 अथवा 9410321614' पर संपर्क किया जा सकता है।

वृद्धजन की आवाज को शासन-प्रशासन तक पहुंचाना प्राथमिकता : डीएम

जयन्त प्रतिनिधि। पौड़ी : जिलाधिकारी डा. आशीष चौहान ने सुशासन सप्ताह के दौरान जिले के वृद्धजनों के कल्याण के लिए होने वाले कार्यों को लेकर बैठक का आयोजन किया। बैठक में डीएम ने कहा कि वृद्धजन हमारे समाज का आधार हैं और उनकी आवाज शासन-प्रशासन तक पहुंचाना हमारी प्राथमिकता है। डीएम ने अफसरों को सभी चिन्हित वृद्धजनों तक सहायता पहुंचाने की कार्रवाई 25 दिसंबर तक पूरी करने के निर्देश दिए हैं।

बैठक में निर्णय लिया गया कि जिले के 585 वृद्धजनों के लिए सुशासन सप्ताह के दौरान बुढ़ापे का सहारा अधिकारी नियुक्त किए जाएंगे। डीएम ने बताया कि कई वृद्धजन उम्र दराज होने के चलते फिंगरप्रिंट स्कैनिंग में समस्या के चलते आधार कार्ड नहीं बनवा पाते हैं, जिले में ऐसे वृद्धजनों की संख्या 248 है। कहा कि ऐसे वृद्धजनों के लिए विशेष अभियान चलाने के निर्देश दिए हैं। बैठक में अपर जिलाधिकारी अनिल गर्ब्याल, परियोजना निदेशक डीआरडीए विवेक कुमार उपाध्याय, डीडीओ मनविंदर कौर आदि शामिल रहे।

निकाय चुनावों के लिए कांग्रेस पर्यवेक्षकों ने कार्यकर्ताओं का मन टटोला

चमोली : नगर निकाय चुनाव के लिए राजनैतिक दलों ने नगर पालिकाओं और नगर पंचायतों से अध्यक्ष और सभासदों के लिए दावेदारों के दावे और कार्यकर्ताओं का मन टटोलने की कवायद तेज कर दी है। शुक्रवार को जिला मुख्यालय गोपेश्वर में कांग्रेस पार्टी ने गोपेश्वर चमोली नगर पालिका, जोशीमठ नगर पालिका तथा नन्दानगर और नन्द प्रयाग नगर पंचायतों से अध्यक्ष पद के लिए दावेदारों और कार्यकर्ताओं के साथ बैठक कर रायशुमारी की। कांग्रेस पार्टी से निकाय चुनाव के लिए चमोली जिले के जिला प्रभारी पर्यवेक्षक द्वारहाट के विधायक मदन बिष्ट ने गोपेश्वर, जोशीमठ, पीपलकोटी, नंदप्रयाग व नंदानगर नगर के कांग्रेस कार्यकर्ताओं की बैठक में कार्यकर्ताओं के मन की बात और अध्यक्ष पद के दावेदारों के दावे और आधार जाने।

190 आपत्तियां हुई दर्ज, मात्र पचास पर ही हुई सुनवाई

शेष आपत्तियों पर रविवार सुबह 11 बजे से तहसील में होगी सुनवाई

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : नगर निगम चुनाव में आरक्षण की स्थिति को लेकर 190 आपत्तियां दर्ज की गई है। जिसमें से पचास आपत्तियों पर शनिवार को सुनवाई की गई। शेष आपत्तियों पर रविवार सुबह 11 बजे से तहसील परिसर में सुनवाई की जाएगी। इस दौरान अधिकांश लोग वार्डों में आरक्षण की स्थिति को लेकर असंतुष्ट ही दिखे।

शनिवार को तहसील में वार्डों की स्थिति को लेकर दर्ज आपत्तियों पर सुनवाई की गई। उपजिलाधिकारी सोहन सिंह सैनी की अध्यक्षता में हुई सुनवाई में लोगों ने आरक्षण की स्थिति को पूर्व की भांति रखने पर रोष व्यक्त किया। कुछ आपत्तिकर्त्ता अपनी आपत्ति के जवाब को सुन शांतिपूर्ण तरीके से वापस लौट रहे थे, जबकि कुछ वार्डों में आरक्षण की स्थिति न बदले जाने पर भड़कते नजर आए। अधिकांश लोगों का कहना था कि धरातल की स्थिति को जाने बिना ही आरक्षण को यथावत रख दिया गया। बालासौड़ निवासी राजाराम अण्थवाल का कहना था कि यदि 2011 की जनसंख्या के अनुसार आरक्षण का निर्धारण किया गया है तो महापौर की सीट भी पूर्व की भांति महिला आरक्षित होनी चाहिए थी।

कोटद्वार के तहसील सभागार में आपत्तियों को सुनते उपजिलाधिकारी सोहन सिंह सैनी

मौके पर मौजूद कई अन्य लोगों ने उनकी बात का समर्थन किया। कहा कि आरक्षण करने से पहले धरातल की स्थिति को जानना आवश्यक था। कई लोगों ने वार्डों के इस आरक्षण के खिलाफ न्यायालय में जाने की बात कही। सबसे अधिक आपत्तियां शिवपुर क्षेत्र में वार्ड संख्या 18 से आई हैं। यहां से शनिवार दोपहर तक 94 आपत्तियां दर्ज की गई। इसके अलावा पश्चिमी झंडीचौड़ वार्ड संख्या–37 से 26 और लकड़ीपड़ाव वार्ड संख्या–05 से 17 आपत्तियां आई हैं। क्षेत्र के 21 वार्डों से कोई आपत्ति नहीं आई है। उपजिलाधिकारी सोहन सिंह सैनी ने बताया कि अभी तक 190 आपत्तियां दर्ज हुई, जिनमें से 50 आपत्तियों को शनिवार को सुना गया। शेष आपत्तियों पर रविवार सुबह 11 बजे से सुनवाई प्रारंभ होगी।

अनदेखी पर रोष

वार्ड नंबर 22 सिम्मलचौड़ निवासी विकास कुमार आर्य ने नगर निगम चुनाव में दोबारा वार्ड की पार्षद सीट अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित किए जाने पर रोष व्यक्त किया है। कहा कि इससे सामान्य वर्ग के लोगों की अनदेखी की जा रही है। इस संबंध में विकास आर्य ने जिलाधिकारी को ज्ञापन भेजा। बताया कि गत चुनाव में भी वार्ड 22 सिम्मलचौड़ वार्ड की सीट अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित की गई थी। जबकि, इस बार इसमें बदलाव किया जाना चाहिए। बावजूद इसके स्थिति में कोई बदलाव नहीं किया गया है। जिसके कारण सामान्य जाति के परिवार चुनाव लड़ने से वंचित रह रहे हैं। कहा कि इस पर गंभीरता से ध्यान देते हुए सीट को सामान्य किया जाना चाहिए।

निकाय चुनाव : पौड़ी और सतपुली में आपत्तियों का निस्तारण शुरू

जयन्त प्रतिनिधि। पौड़ी : पौड़ी जिले में निकायों के वार्डों के लिए तय हुए मौजूदा आरक्षण को लेकर अंतिम दिन शनिवार तक आपत्तियों का मिलना जारी रहा। शनिवार को पौड़ी नगर पालिका के 11 वार्डों में कुल 43 आपत्तियां मिली। वहीं पौड़ी नगर पालिका में जिला विकास अधिकारी मनवंदिर कौर, सतपुली में एसडीएम अनिल चन्याल द्वारा आपत्तियों का निस्तारण शुरू कर दिया गया है। वहीं नगर निगम कोटद्वार के वार्डों में 190 आपत्तियां दर्ज की गई है। जिसमें से पचास आपत्तियों पर शनिवार को सुनवाई की गई। शेष आपत्तियों पर रविवार सुबह 11 बजे से तहसील परिसर में सुनवाई की जाएगी। डीएम को फाइनल रिपोर्ट मिलने के बाद उनके द्वारा अंतिम सूची जारी की जाएगी। डीएम स्तर से तय किए गए नगर निगमों, पालिकाओं और नगर पंचायतों के वार्डों के आरक्षण पर आपत्तियों के लिए शनिवार को अंतिम तिथि रखी गई थी। शनिवार तक पौड़ी नगर पालिका के 11 वार्डों के लिए 43, श्रीनगर व कोटद्वार नगर निगम के 40 वार्डों के लिए 11-11, सततुली नगर पंचायत के 4 वार्डों के लिए 2, स्वर्गाश्रम जौंक नगर पंचायत के लिए 1, दुगडडा नगर पालिका के 4 वार्डों के लिए 3 आपत्तियां दर्ज हुई। जबकि पहली बार अस्तित्व में आई नगर पंचायत थलीसैंण के 4 वार्डों के लिए एक भी आपत्ति नहीं आई। आपत्तियों में श्रीनगर नगर निगम के सामान्य वार्ड नंबर एक किलियासौड़ को एससी महिला के लिए आरक्षित किए जाने, वार्ड नंबर 21 को सामान्य किए जाने, वार्ड नंबर 29 को ओबीसी किए जाने, पौड़ी जिले की नगर पालिका दुगड्डा के वार्ड नंबर 2 को कोई सामान्य महिला तो कोई एससी महिला के लिए आरक्षित किए जाने, नगर निगम कोटद्वार के वार्ड 39 पूर्वी झंडीचौड़, आरक्षित वार्ड पश्चमी झंडी चौड़ 37 और ओबीसी के लिए आरक्षित लकड़ी पड़ाव संख्या 5 को सामान्य किए जाने सहित अन्य आपत्तियां शामिल है। वहीं, आपत्तियों की सुनवाई के लिए नामित अफसरों द्वारा सुनवाई जारी कर दी गई है।

लघु उद्योग को बढ़ावा देने के लिए अपनाएं स्वदेशी वस्तु

कोटद्वार में आयोजित फाउंडेशन के कार्यक्रम का शुभारंभ करते सदस्य

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : वार्ड नंबर 19 में स्वदेशी भारत फाउंडेशन की ओर से अपना प्रथम स्थापना दिवस मनाया गया। इस दौरान आमजन से लघु उद्योग को बढ़ावा देने के लिए स्वदेश में निर्मित वस्तुओं को अपनाने की अपील की गई।

शनिवार को कार्यक्रम का शुभारंभ संस्था के अध्यक्ष धीरेंद्र सागर गढ़वाली, पूर्व पार्षद लीला कर्णवाल ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्जवलित कर किया। वक्ताओं ने कहा कि हमें कृषि, पशुपालन, कुटीर उद्योग, लघु उद्योग, दीर्घ उद्योग को बढ़-ावा देना चाहिए, जिससे स्वयं की आर्थिकी के साथ ही देश की जीडीपी भी मजबूत होगी। कहा कि फाउंडेशन ने स्वदेशी अचार के ब्रांड के साथ अपना सफर शुरू किया था। आज कई महिलाओं को अचार बनाने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। कार्यक्रम में देश की रक्षा में अपना योगदान देने वाले वीर सैनिकों को भी याद किया गया। कहा कि सरकार को शहीदों के नाम पर पार्क व अन्य संस्थानों का निर्माण करना चाहिए। इस मौके पर कमल रावत, विमल कोटियाल, मनोज भंडारी, तनिष्का, कमल कोटियाल, प्रेम सागर, कुसुम, पूजा आदि मौजूद रहे।

सड़क पर घूम रहे गोवंशों के संरक्षण को शुरू किया धरना

जागृति गढ़वाल जनजागरण संस्था की ओर से शुरू किया गया धरना

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : गढ़वाल के प्रवेश द्वार कोटद्वार में लगातार बढ़ रहे आवारा गोवंशों की संख्या पर जागृति गढ़वाल जनजागरण संस्था ने रोष व्यक्त किया है। संस्था के सदस्यों ने तहसील में क्रमिक अनशन करते हुए जल्द गोवंश संरक्षण की मांग उठाई। इस दौरान 26 दिसंबर से आमरण अनशन की भी चेतावनी दी गई।

शनिवार को संस्था के अध्यक्ष मनीष भट्ट के नेतृत्व में सदस्यों ने तहसील परिसर में क्रमिक अनशन दिया। मनीष भट्ट ने कहा कि कोटद्वार की सड़कों पर लगातार आवारा गोवंशों की संख्या बढ़ती जा रही है। आए दिन गोवंश राह चलते व्यक्तियों पर हमला कर उन्हें घायल कर रहे हैं। सबसे अधिक खतरा स्कूली बच्चों व बुजुर्गों को बना हुआ है। कुछ माह पूर्व पटेल मार्ग में एक गोवंश ने महिला पर हमला कर दिया था। महिला को बेस अस्पताल में उपचार के बाद हायर सेंटर रेफर किया गया। यही नहीं, झंडाचौक के समीप दो गोवंश लड़ते हुए एक दुकान के भीतर घुस गए थे। व्यापारी ने भाग कर अपनी जान बचाई। दो दिन पूर्व बदरीनाथ मार्ग में एक होटल के भीतर भी गोवंश घुस गए थे, जिसका वीडियो इंटरनेट मीडिया पर भी काफी वायरल हुआ। बताया कि गोवंश रात के अंधेरे में काश्तकारों के खेतों में घुस कर उनकी फसल को चट कर देते हैं, जिससे काश्तकारों को आर्थिक नुकसान झेलना पड़ रहा है। लगातार शिकायत के बाद भी नगर निगम व प्रशासन गोवंश संरक्षण को लेकर गंभीरता नहीं दिखा रहा। संस्था को व्यापार मंडल, ग्रीन पल्स सोसाइटी, डू समथिंग सोसाइटी, देवभूमि फाउंडेशन, बार एसोसिएशन व श्रम जीवी पत्रकार यूनियन ने भी अपना समर्थन दिया।

कोटद्वार तहसील में क्रमिक अनशन पर बैठक संस्था के सदस्य व अन्य

कैरम प्रतियोगिता में प्रियांशी व सामर्थ रहे प्रथम

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : क्रैडिल पब्लिक स्कूल में आयोजित वार्षिक खेल सप्ताह के तहत शनिवार को विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस दौरान कैरम प्रतियोगिता में प्रियांशी व समर्थ ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

शनिवार को स्कूल की प्रबंधक रेणुका गुसाईं व प्रधानाचार्य लता बिष्ट, राजीव गुसाईं ने खिलाड़ियों का परिचय लेकर प्रतियोगिता का शुभारंभ किया। इस दौरान जूनियर एकल बालिका वर्ग की कैरम प्रतियोगिता में प्रियांशी, नित्या व इशिता और बालक वर्ग में समर्थ, रुद्रांश व आदित्य ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया। सीनियर कैरम एकल बालिका वर्ग में क्रमशः पूजा, निधि व अनुष्का और बालक वर्ग में मयंक, प्रिंस व साहिल क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय रहे। सीनियर कैरम डबल्स बालिका वर्ग में सिमरन राणा-आशी प्रथम, अनन्या-कनक द्वितीय व मानसी-प्रिया रावत तृतीय रहे। जबकि बालक वर्ग में अभिजीत-अर्णव प्रथम, दुर्गेश-वरूण द्वितीय व विराट-आयुष तृतीय रहे। शतरंज के सीनियर एकल बालिका वर्ग में जाह्नवी, खुशी व सिमरन और बालक वर्ग में क्रमशः लविश, श्रेयश व शाश्वत क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय रहे। बैडमिंटन प्रतियोगिता के सीनियर सिंगल्स बालिका वर्ग में महक प्रथम व मानसी द्वितीय रही। बैडमिंटन के सीनियर डबल्स बालिका वर्ग में उर्मिला-प्रियांशी प्रथम व आकृति-प्रिया रावत द्वितीय रहे। जबकि बालक वर्ग में आशुतोष-प्रणत प्रथम और अविन-विराट कुमार द्वितीय रहे। जूनियर डबल्स बालिका वर्ग में प्रियांशी–पार्थवी प्रथम व नित्या-निहारिका द्वितीय रहे। जबकि बालक वर्ग में शिवांश-सक्षम घनशाला प्रथम व मनन-श्रेयश द्वितीय रहे। खो-खो के सीनियर बालक वर्ग में ब्लू हाउस प्रथम, येलो हाउस द्वितीय व ग्रीन हाउस तृतीय रहे। जबकि बालिका वर्ग में ब्लू हाउस प्रथम, रेड हाउस द्वितीय व येलो हाउस तृतीय रहे।

आयोजित प्रतियोगिता में प्रतिभाग करते खिलाड़ी

विद्यार्थियों ने चलाया स्वच्छता अभियान,लोगों को किया प्रेरित

जयन्त प्रतिनिधि।

कोटद्वार : आमजन को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने के लिए हेड हेरिटेज एकडेमी के बच्चों ने श्री सिद्धबली मंदिर के समीप खोह नदी में स्वच्छता अभियान चलाया।

विद्यालय के निदेशक कर्नल (सेनि) कुंवर अजय सिंह, कर्नल (सेनि) एसपी वर्मा के नेतृत्व में विद्यार्थियों ने स्वच्छता अभियान चलाया। कहा कि हमें स्वच्छ व स्वस्थ समाज निर्माण के लिए सफाई पर विशेष ध्यान देना चाहिए। बच्चों ने करीब एक किलोमीटर के दायरे में नदी में मौजूद कचरे को हटाया। स्वच्छता अभियान के बाद बच्चों की टोली मंदिर परिसर में पहुंची, जहां मंदिर समिति के अध्यक्ष डा. जेपी ध्यानी की ओर से बच्चों के लिए जलपान की व्यवस्था की गई थी। इस दौरान बच्चों को स्वच्छ भारत अभियान के महत्व व इससे हो रहे फायदों के बारे में जानकारी दी गई। बच्चों ने भविष्य में भी स्वच्छता अभियान चलाए जाने की शपथ ली। इस मौके पर विद्यालय के कई शिक्षक भी मौजूद रहे।

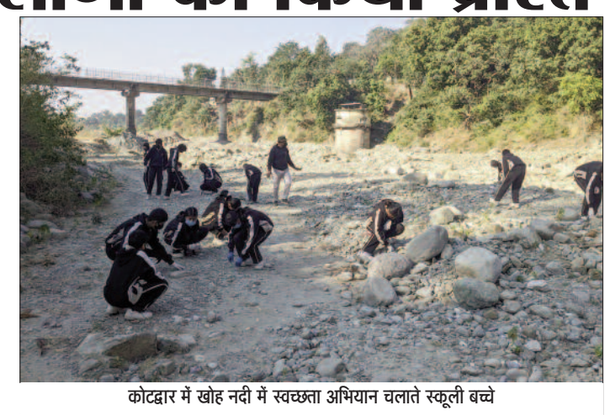

कोटद्वार में खोह नदी में स्वच्छता अभियान चलाते स्कूली बच्चे

स्वयं सेवियों ने ली स्वच्छता की शपथ

जयन्त प्रतिनिधि।

थलीसैंण : राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, थलीसैंण में राष्ट्रीय सेवा योजना एवं नमामि गंगे के संयुक्त तत्वावधान में एक दिवसीय नियमित शिविर का आयोजन किया गया। इस दौरान राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी डा. विवेक रावत द्वारा सभी स्वयं सेवियों को स्वच्छता की शपथ दिलाई गई।

शिविर की अध्यक्षता करते हुए प्रभारी प्राचार्य डा. बिपेंद्र सिंह रावत ने स्वयं सेवियों को स्वच्छता के महत्व एवं जल संरक्षण के बारे में बताया। कहा कि स्वयं सेवी एक विद्यार्थी के रूप में अध्ययन करने के साथ-साथ समाज को जागरूक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस दौरान स्वच्छता अभियान चलाया गया, जिसमें स्वयं सेवियों द्वारा सबसे पहले महाविद्यालय पुस्तकालय प्रांगण के आसपास कटीली झाड़ियों को साफ किया गया और मुख्य द्वार के अंदर की तरफ से खरपतवार को हटाया गया। साथ ही पौधों को पानी दिया गया। स्वयं सेवियों द्वारा महाविद्यालय के समीप जल स्रोत के आसपास फैले कचरे को इकट्ठा करते हुए एक स्थान पर ढेर लगाने के पश्चात उसका निस्तारण किया गया। इस मौके पर राष्ट्रीय सेवा योजना सह प्रभारी डा. प्रमिल्ला चौहान, डा. विनोद कुमार, अंजू नेगी, अनिल कुमार आदि शामिल रहे।

मांगों पर कार्यवाही न होने पर भड़का संविदा श्रमिक संघ

श्रीनगर गढ़वाल : उत्तराखंड जल संस्थान संविदा श्रमिक संघ शाखा देवप्रयाग की बगवान में एक विशेष बैठक की गई। बैठक में न्यूनतम वेतन, ईपीएफ और एरियर का लाभ न दिए जाने पर आक्रोश व्यक्त किया। बैठक में जल संस्थान के प्रांतीय महामंत्री संविदा श्रमिक संघ मंगलेश लखेड़ा, अध्यक्ष चंद्रमोहन, आशीष द्विवेदी ने कहा कि पूर्व में देहरादून में न्यूनतम वेतन, ईपीएफ और एरियर का लाभ दिए जाने सहित 15 सूत्रीय मांगों को लेकर चले धरने के दौरान हुए उच्च पदाधिकारियों द्वारा दिए आश्वासन पर अभी तक किसी भी प्रकार की कार्यवाही नहीं हुई है। जिससे संविदा कर्मचारियों में रोष व्याप्त है। उन्होंने कहा कि यदि 31 जनवरी तक तीन सूत्रीय मांगों पर सकारात्मक कार्यवाही नहीं होती है तो वह एक जनवरी से जल संस्थान के मुख्य प्रबंधक कार्यालय में धरना प्रदर्शन के लिए बाध्य होंगे।

प्रशिक्षुओं को किए प्रमाण पत्र वितरित

जयन्त प्रतिनिधि।

सतपुली : सतपुली स्थित एक निजी होटल में बद्री फाउंडेशन एवं कॉटन कनेक्ट फार्मर कम्यूनिटी फाउंडेशन के सहयोग से सौंदर्यशाला व ब्यूटीशियन कोशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौके पर प्रशिक्षुओं को प्रमाण पत्र वितरित किये गये।

बद्री फाउंडेशन के संयोजक योगेश बलूनी ने जानकारी देते हुए बताया कि महिलाओं को आत्मनिर्भर और स्वावलंबी बनाने के लिए इस प्रकार के कार्यक्रम लगातार चलाएं जा रहे है। इसी के तहत सतपुली में प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें करीब 50 महिला एवं युवतियों ने प्रशिक्षण लिया।

कहा कि बीना ठाकुर संयोजक कॉटन कनेक्ट फार्मर कम्यूनिटी फाउंडेशन साथ ही कई और अन्य प्रशिक्षण कार्यक्रम सतपुली में चल रहे है। जिसमें ब्यूटीशियन, सिलाई, कढ़ाई सहित अन्य प्रशिक्षण दिये जा रहे है। कार्यक्रम का संचालन मुकेश बहुगुणा ने किया। कार्यक्रम में बद्री फाउंडेशन के संयोजक योगेश बलूनी, बीना ठाकुर संयोजक कॉटन कनेक्ट फार्मर कम्यूनिटी फाउंडेशन, श्रीमती अंजना वर्मा, ओम प्रकाश चंदोला, जयदीप नेगी अध्यक्ष व्यापार मंडल, अशोक डुकलान, त्रिलोक चौहान, सुनीता चंदोला संस्थापक चंदोला ब्यूटी पार्लर, आनंदमनी बलूनी, बृजमोहन रावत, मीना लिंगवाल प्रधानाध्यापिका मार्डन पब्लिक स्कूल, मनीष खुगशाल स्वतंत्र, अनूप काला, चंद्रमोहन रावत, संयम काला, नितिन काला, कृष्ण काला आदि मौजूद थे।

पुलिस ने किया बुजुर्ग महिला को सकुशल बरामद

जयन्त प्रतिनिधि।

पौड़ी : थाना सतपुली पुलिस ने एक बुजुर्ग महिला को सकुशल बरामद कर लिया है। सोशल मीडिया के माध्यम से जारी की गई फोटो के आधार पर नंदोली गांव के व्यक्ति ने महिला को पहचान लिया और पुलिस को सूचना दी। महिला को हंस हॉस्पिटल सतपुली में आँखों के आपरेशन के लिए लगाया गया था।

थानाध्यक्ष दीपक तिवाड़ी ने बताया कि पुलिस को सूचना मिली कि पिथौरागढ़ के ग्राम तेजम निवासी महिला गोपुली देवी पत्नी त्रिलोक सिंह जिन्हें हंस हॉस्पिटल, सतपुली में हंस हॉस्पिटल द्वारा आंखों का ऑपरेशन करने के लिए लाया गया था, बिना बताए हॉस्पिटल से कही चली गई। पुलिस ने गुमशुदा के परिजनों को तत्काल जानकारी देते हुए गुमशुदा की सकुशल बरामदगी करने के लिए एएसआई सोहनलाल के नेतृत्व में टीम गठित की। गुमशुदा गोपुली देवी की मानसिक स्थिति ठीक नहीं थी। मात्र गुमशुदा के फोटो के आधार पर थाना सतपुली एवं आसपास के राजस्व क्षेत्र अंतर्गत गोपुली देवी के फोटो का व्हाट्सएप एवं फेसबुक के माध्यम से प्रचार-प्रसार किया गया। साथ ही तलाश जारी रखी गई। इसी दौरान राजस्व क्षेत्र में बिलखेत-पौड़ी मोटर मार्ग पर बुनगा बैंड के समीप नंदोली गांव के स्थानीय नागरिक के द्वारा मोबाइल से थाना सतपुली पर सूचना दी गई कि फोटो से मिलती जुलती महिला इस समय उनके गांव के पास घूम रही है। इस सूचना पर थाना सतपुली पुलिस द्वारा मौके पर पहुंचकर गुमशुदा गोपुली देवी की सकुशल बरामदगी की गई।

पाले में फिसली टैक्सी, दो महिलाएं घायल

चमोली : शनिवार सुबह कर्णप्रयाग-नौटी मोटर मार्ग पर कुकुड़ई गांव के पास एक टैक्सी पाले में फिसल गई। हादसे में दो महिलाएं घायल हो गईं। सीएचसी कर्णप्रयाग में प्राथमिक उपचार के बाद दोनों को घर भेज दिया गया है। नौटी गांव के सामाजिक कार्यकर्ता सुभाष रावत ने बताया कि टैक्सी नंदासैंण से कर्णप्रयाग आ रही थी। सुबह करीब 10:45 बजे कुकुड़ई गांव के पास पाले में टैक्सी फिसलने से सड़क किनारे झाड़ियों में चली गई। जिससे दुपतोली नंदासैंण की अंकिता और सरोज घायल हो गई।

कांग्रेसियों ने किया केंद्र सरकार के खिलाफ प्रदर्शन

श्रीनगर गढ़वाल : कांग्रेस कमेटी कीर्तिनगर ने बाबा साहब भीमराव आंबेडकर पर विवादित बयान देने और नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी पर एफआईआर दर्ज कराने पर शनिवार को गृह मंत्री और केंद्र सरकार के खिलाफ प्रदर्शन किया। इस मौके पर कांग्रेस सेवादल जिला अध्यक्ष राजेंद्र सिंह चंद ने कहा कि मोदी सरकार देश के महान स्वतंत्रता सेनानियों का अपमान करके संविधान को खत्म करने की बड़ी साजिश कर रही हैं। जिसको देश की जनता सहन नहीं करेगी। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के राष्ट्रीय नेता राहुल गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी पूरे देश में संविधान बचाने के लिए सड़कों पर उतरेगी। उन्होंने गृह मंत्री से सार्वजनिक माफी मांगने की मांग की। उन्होंने कहा कि आजादी के जननायकों का अपमान करना भाजपा की नियति बन चुकी है। भाजपा सरकार द्वारा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, पंडित जवाहर लाल नेहरू और डा. आंबेडकर का संसद के भीतर अनेकों बार अपमान करके भारतीय संविधान को कमजोर करने का कृत्य किया जा रहा है।

सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरी भारतीय जीवन बीमा निगम की पॉलिसी संख्या 273576435 में मेरा नाम (SONA THUKRAL) सोना ठुकराल गलत दर्ज हो गया है। जबकि मेरा सही व वास्तविक नाम सोनिया है। जो कि मेरे आधार कार्ड एवं बैंक की पास बुक में दर्ज है। अतः मेरी उक्त पॉलिसी में मेरा सही व वास्तविक नाम सोनिया अंकित किया जाये।

सोनिया पत्नी जनक राज निवासी वार्ड नंबर-6, रमेश नगर, नया गांव, कोटद्वार, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड।

(0632/21)

एक नजर

खाद्य व दवा के 7 नमूने लेकर जांच को भेजे

नई टिहरी : शनिवार को खाद्य एवं औषधि व प्रशासन विभाग ने जनपद मुख्यालय नई टिहरी के बौराड़ी में खाद्य एवं दवाई की दुकानों का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान 6 खाद्य पदार्थों और एक दवाई का सैंपल लिया। जिन्हें जांच के लिए अधिकृत प्रयोगशाला भेजा गया है। मौके पर खाद्य कारोबारियों को साफ-सफाई और स्वच्छ खाद्य पदार्थ ग्राहकों को बेचने की हिदायत भी दी गई। खाद्य एवं औषधि प्रशासन विभाग के जिला अभिहित अधिकारी प्रमोद रावत ने निरीक्षण की जानकारी देते हुए बताया कि जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव व सीनियर सिविल जज आलोक राम त्रिपाठी के निर्देश पर खाद्य पदार्थों की जांच व एक्सायरी दवाओं की बिक्री रोकने के लिए यह संयुक्त अभियान शनिवार को चलाया गया। जिसके तहत 10 प्रतिष्ठानों का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान औषधि विक्रेताओं को कालातीत दवाओं के लिए अलग काउंटर लगाने को भी निर्देशित किया गया। इस दौरान वरिष्ठ खाद्य सुरक्षा अधिकारी शारदा शर्मा ने 3 मिठाई, एक बेनी फूड, एक सिंवई व एक खाद्य तेल का नमूना भी संदेह के आधार पर संग्रहित किया गया। औषधि निरीक्षिक चंद्र प्रकाश नेगी ने एक दवा का नूमना संदेह के आधार पर संग्रहित किया। निरीक्षण के दौरान एसीएमओ डा. एलडी सेमवाल दवाई प्रतिष्ठानों में शैड्यूल रजिस्टर व एक्सपायरी दवाओं को लेकर निरीक्षण किया। बताया कि आगे भी खाद्य संरक्षा व औषधि को लेकर विभाग का यह अभियान जारी रहेगा। अन्य स्थानों पर भी निरीक्षण कर कार्यवाही की जायेगी।

हर माह लगेगा दिव्यांग शिविर

श्रीनगर गढ़वाल : उपजिला चिकित्सालय श्रीनगर में अब प्रत्येक माह दिव्यांग शिविर आयोजित किया जायेगा। इसको लेकर मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने प्रत्येक माह को एक दिन दिव्यांग शिविर लगाने की स्वीकृति दे दी है। कहा कि संयुक्त उपजिला चिकित्सालय में प्रत्येक माह के अंतिम शुक्रवार को शिविर आयोजित किया जायेगा। पूर्व में मांग को लेकर भाजपा कार्यकर्ता कुशलानाथ ने कैबिनेट मंत्री डा. धन सिंह रावत को ज्ञापन प्रेषित किया था। जिसमें उन्होंने श्रीनगर में दिव्यांग शिविर लगाकार क्षेत्र के आस-पास रहने वाले लाभार्थियों को इसका लाभ मिल सके।

गोवंश के साथ एक आरोपी गिरफ्तार

विकासनगर। सहसपुर पुलिस ने गोकशी के लिए ले जाए जा रहे दो गोवंश को मुक्त कराया है। मौके से पुलिस ने एक आरोपी को लोडर वाहन के साथ गिरफ्तार किया है। अंधेरे का फायदा उठाकर अन्य आरोपी भागने में सफल रहे। मौके से पुलिस ने एक कुल्हाड़ी और चाकू भी बरामद किया है। थानाध्यक्ष सहसपुर मुकेश त्यागी ने बताया कि शुक्रवार रात को पुलिस खुशहालपुर गांव में गश्त कर रही थी। इस दौरान मुखबिर ने सूचना दी कि कुछ लोग एक वाहन में दो गोवंश लेकर घमोलो जाने वाले रोड से आसन नदी की ओर गोकशी के लिए ले जा रहे हैं। सूचना के बाद टीम घमोलो रोड से आसन नदी जाने वाले रास्ते पर पहुंची। आसन नदी के पास एक सुनसान जगह पर टीम को एक वाहन खड़ा दिखाई दिया। कुछ लोग वाहन से पशुओं को बाहर निकालने का प्रयास कर रहे थे। पुलिस को देखकर पशु नीचे उतार रहे व्यक्ति भागने लगे। पीछा कर पुलिस ने व्यक्ति को पकड़ लिया। अन्य लोग अंधेरे का फायदा उठाकर भाग गए। पकड़े गये व्यक्ति की पहचान अजमेर सिंह उर्फ बिट्टू पुत्र कुशलपाल सिंह निवासी भीमावाला विकासनगर के रूप में हुई। पूछताछ में उसने बताया कि वह वाहन का चालक है। दो गोवंश वह लोड कर विकासनगर से लाया। इसके बाद पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। फरार आरोपियों की तलाश की जा रही है।

दुकान से एक लाख नगदी और स्पेयर पार्ट चोरी

विकासनर। थाना सहसपुर के ढाकी में चोरों ने एक कृषि उपकरणों के स्पेयर पार्ट की दुकान का ताला तोड़कर एक लाख की नगदी और लाखों की कीमत के स्पेयर पार्ट चुरा लिए। सूचना पर पहुंची पुलिस ने मौके का मुआयना किया। तहरीर के बाद अज्ञात चोरों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर पुलिस ने जांच–पड़ताल शुरू कर दी है। आसपास के सीसीटीवी कैमरे खंगाले जा रहे हैं। जानकारी के मुताबिक तरुण कुमार गोयल पुत्र राजेंद्र गोयल निवासी मूलचंद एनक्लेव माजरा देहरादून की ढाकी सहसपुर में अवनी एंटरप्राइजेज नाम से स्पेयर पार्ट की दुकान है। तरुण के मुताबिक शुक्रवार सुबह जब वह अपनी दुकान पर पहुंचे तो उनके होश उड़ गए। दुकान के ताले टूटे हुए थे।

रेडक्रॉस सोसाइटी की नई कार्यकारिणी के गठन हेतु फरवरी में होंगे चुनाव

जयन्त प्रतिनिधि।

चमोली : मुख्य विकास अधिकारी नंदन कुमार की अध्यक्षता में शनिवार को कलेक्ट्रेट सभागार में जिला रेडक्रॉस सोसाइटी प्रबंधन समिति की आम बैठक हुई। जिसमें रेड क्रॉस सोसाइटी के विभिन्न विषयों पर विचार विमर्श के साथ ही नवीन कार्यकारिणी के गठन पर चर्चा की गई।

मुख्य विकास अधिकारी ने सदस्य सचिव द्वारा आम बैठक में रेडक्रॉस सोसाइटी के आय व्यय सहित पिछले कार्यों की सटीक जानकारी और सोसाइटी के सदस्यों की सूची उपलब्ध न कराए जाने पर गहरी नाराजगी व्यक्त की। उन्होंने सोसाइटी के रिकार्ड का सही से लेखा जोखा रखने के निर्देश दिए। साथ ही सोसाइटी के सभी सदस्यों की सूची तैयार करने के बाद आगामी फरवरी में नवीन कार्यकारिणी के गठन हेतु चुनाव कराने को कहा। मुख्य विकास अधिकारी ने कहा कि फरवरी तक सभी सदस्यों की सूची तैयार करें। चुनाव के लिए सभी आजीवन सदस्यों को जानकारी दी जाए। ताकि पारदर्शिता के साथ नवीन कार्यकारिणी के गठन हेतु चुनाव संपन्न कराए जा सके। सदस्य सचिव ने रेडक्रॉस सोसाइटी के कार्यालय हेतु कम्प्यूटर, प्रिंटर, फर्नीचर और क्लर्क न होने की समस्या पर मुख्य विकास अधिकारी ने कहा कि सामग्री क्रय के लिए प्रस्ताव उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। साथ ही उन्होंने रेडक्रॉस कार्यालय के लिए सीएमओ को एनएचएम से कार्मिक की व्यवस्था बनाने के निर्देश भी दिए। बैठक में फर्स्ट एड रिस्पोन्स एवं स्वयं सेवकों हेतु प्रशिक्षण पर चर्चा के दौरान मुख्य विकास अधिकारी ने कहा कि मास्टर ट्रेनरों की संख्या बढ़ाते हुए अधिक से अधिक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जाए। रेडक्रॉस सोसाइटी में सदस्यों की संख्या बढ़ाने के लिए अभियान चलाया जाए। सदस्य सचिव ने बताया कि रेडक्रॉस सोसाइटी में करीब 14 लाख की धनराशि जमा है। सोसाइटी में पिछले वर्ष 62 नए सदस्य जुड़े है।

साइंस सोशल साइंस एग्जीबिशन रामायण एक्ट का हुआ आयोजन

जयन्त प्रतिनिधि। सतपुली : विकासखंड पोखडा के सुनैना रावत नवदीप चिल्ड्रन एकेडमी में शनिवार को साइंस सोशल साईंस एग्जीबिशन रामायण एक्ट व सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान छात्र-छात्राओं सहित अभिभावकों में रामायण एक्ट को लेकर खासा उत्साह देखने को मिला। कार्यक्रम का शुभारंभ खंड शिक्षा अधिकारी पोखड़ा अमित चौहान व थलीसैंण वीरेंद्र पवार द्वारा द्वीप प्रज्वलित कर किया गया। इस दौरान प्रधानाचार्य अनुराग बौंठियाल, प्राथमिक शिक्षक संघ अध्यक्ष संजय गुसाई, सीआरसी जगमोहन सिंह रावत, बीआरसी मनोज रावत, पूर्व ब्लाक प्रमुख सुरेंद्र सिंह रावत, ग्राम प्रधान मनोज नौडियाल, अशोक सिंह, राजेश कुमार, निर्मला सुंदरियाल, सुमित्रा देवी सहित शिक्षक ग्रामीण व छात्र उपस्थित रहे।

जनता भाजपा का मेयर और पार्षदों को जिताकर देगी ईनाम : रावत

श्रीनगर गढ़वाल : भारतीय जनता पार्टी श्रीनगर मंडल के अंतर्गत शनिवार को आदिति स्मृति न्यास में भाजपा बूथ अध्यक्ष एवं बूथ प्रभारी समिति का स्वागत और अभिनंदन समारोह सम्पन्न हुआ।

कैबिनेट मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने श्रीनगर नगर निगम क्षेत्र के अंतर्गत किए गए विकास कार्यों को रखा। कहा कि श्रीनगर नगर निगम क्षेत्र की जनता भाजपा का मेयर और पार्षदों को जिताकर इनाम देगी। उन्होंने कहा कि जनता के साथ मिलकर भाजपा श्रीनगर नगर निगम को प्रदेश का नंबर वन नगर निगम बनाने का काम करेंगे।

समारोह में कैबिनेट मंत्री डॉ. धन सिंह रावत, भाजपा जिला प्रभारी विजय कपरवाण, भाजपा जिलाध्यक्ष सुषमा रावत एवं श्रीनगर नगर निगम चुनाव प्रभारी रमेश गड़िया ने कार्यकर्ताओं को जीत का मंत्र दिया। कैबिनेट मंत्री डॉ. धन सिंह रावत ने कहा कि नगर निगम क्षेत्र के अंतर्गत गंगा दर्शन के समीप 5 करोड़ की लागत से गोशाला बनाई जा रही है, जो भी एक गाय का पालन पोषण करेगा उसको 80 रुपये दिए जाएंगे। कहा कि स्थानीय गोला बाजार को ढाई करोड़ की लागत से ऐतिहासिक बनाया जाएगा, जिसमें घंटाघर भी बनाया जाएगा, कमलेश्वर मंदिर का भव्य गेट बनाया जाएगा जो लगभग ढाई करोड़ का होगा, 5 करोड़ के लागत से गंगा म्यूजियम बनाया जायेगा। जिला प्रभारी विजय कप्रवान ने कहा सभी एकजुट होकर मेयर और पार्षद का चुनाव जिताने में जुट जाए। भाजपा जिला अध्यक्ष सुषमा रावत ने बताया कि पौड़ी जिले के अंतर्गत जितने भी नगर पंचायत, नगर पालिका, नगर निगम में भाजपा ऐतिहासिक जीत हासिल करेगी।

जरूरतमंद लोगों को बांटे कंबल

जयन्त प्रतिनिधि।

रूद्रप्रयाग : जनपद में शीतलहर के दृष्टिगत जिलाधिकारी सौरभ गहरवार के निर्देशन में जरूरतमंद व्यक्तियों को कंबल वितरित किए गए।

जिला आपदा प्रबंधन अधिकारी नंदन सिंह रजवार ने बताया कि जिलाधिकारी के निर्देशन में शुक्रवार रात्रि को मजदूरों व जरूरतमंदों को कंबल वितरित किए गए। इस विशेष अभियान में 100 से अधिक प्रवासी मजदूरों को शीतलहर से बचाने के लिए गर्म कंबल वितरित किए गए। उन्होंने बताया कि शीतलहर के प्रकोप को देखते हुए बेसहारा व गरीब मजदूरों को कंबल व खाद्य सामग्री आदि वितरित की गई। उन्होंने सभी से अपील करते हुए कहा कि अत्यधिक ठंड के प्रकोप को देखते हुए अनावश्यक अपने घरों से बाहर न निकलें।

प्रकृति परीक्षण अभियान का लक्ष्य हर घर तक आयुर्वेद को पहुंचाना

चमोली : मुख्य विकास अधिकारी नन्दन कुमार की अध्यक्षता में जिला आयुर्वेदिक एवं यूनानी विभाग द्वारा विकास भवन सभागार में देश का प्रकृति परीक्षण अभियान के जनपद में सुचारू संचालन को लेकर जनपद स्तरीय अधिकारियों के साथ कार्यशाला का आयोजन किया गया।

आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति के बारे में जानकारी देते हुए डॉ. सुनील रतूड़ी ने बताया कि भारतीय चिकित्सा पद्धति आयोग एवं आयुष मंत्रालय भारत सरकार के तत्वाधान में प्रकृति परीक्षण अभियान पूरे देश में चलाया जा रहा है। जिसमें 26 नवम्बर से 25 दिसम्बर तक 1 करोड़ लोगों का प्रकृति परीक्षण किया जाना है। जनपद में अब तक 3000 हजार लोगों का प्रकृति परीक्षण किया जा चुका है। उन्होंने बताया कि इस अभियान का लक्ष्य हर घर तक आयुर्वेद को पहुंचना है। प्रकृति परीक्षण अभियान आयुर्वेद के सिद्धांत पर कार्य करता है। कहा कि हर व्यक्ति की प्रकृति अलग होती है। प्रकृति परीक्षण से हर व्यक्ति को अपनी प्रकृति की जानकारी होगी। तो उसके अनुसार कौन सा आहार उसके लिए हितकर है कौन सा नही है।

लोगों को उनकी प्रकृति के अनुरूप आहार व्यवहार और जीवन शैली अपनाने की जानकारी मोबाइल एप्लीकेशन से दी जा रही है और भविष्य मे दी जाएगी। इससे शारीरिक एवं मानसिक रोगों की रोकथाम में मदद मिलेगी। लोग अपनी प्रकृति के अनुसार आहार और दिनचर्या को अपना कर स्वस्थ एवं निरोगी रह सकते हैं।

पुरस्कार वितरण के साथ हुआ पोखरी मेले का समापन

जयन्त प्रतिनिधि। चमोली : चमोली जनपद के पोखरी में सात दिवसीय हिमवंत कवि चन्द्र कुंवर बर्त्वाल खादी ग्रामोद्योग मेले के आखिरी दिवस पर मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसद महेंद्र भट्ट और केदारनाथ के पूर्व विधायक मनोज रावत ने शिरकत की। मेला कमेटी और बद्रीनाथ विधायक लखपत बुटोला ने अंग वस्त्र और स्मृति चिन्ह देकर मुख्य अतिथियों का स्वागत किया। इस दौरान राज्य सभा सांसद और विधायक ने महिला मंगल दल रैता की पौराणिक नृत्य और इन्टर कॉलेज रडुवा के छात्रों के गुरुदेव नृत्य की सुन्दर प्रस्तुति पर सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसद महेंद्र भट्ट ने मेले के सफल आयोजन को लेकर मेला समिति के सभी पदाधिकारियों और क्षेत्रवासियों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि मेले के आयोजन से संस्कृति का आदान प्रदान होता है। मेलों में खेलों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों से नई प्रतिभाओं को उभरने का मौका मिलता है। राज्य सांसद महेंद्र भट्ट ने तहसील के अन्तर्गत वकीलों के भवन निर्माण को लेकर दस लाख

देने की घोषणा भी की। विधायक लखपत बुटोला ने कहा राज्यसभा सांसद महेंद्र भट्ट ने हमेशा पोखरी क्षेत्र के विकास के लिए अनेक सराहनीय विकास कार्य किए गए है। उन्होंने कहा कि जो सहयोग तमाम जनप्रतिनिधि एवं महिलाओं युवाओं और शासन-प्रशासन ने सात दिनों तक दिया इसके लिए सभी का आभार व्यक्त करता है। इस दौरान विधायक ने राज्य सभा सांसद से पोखरी तहसील में वकीलों के बैठने की व्यवस्था के लिए भवन निर्माण और सैरा मालकोटी मोटर मार्ग निर्माण और पालिटेक्निक पोखरी भवन का सुधारीकरण की मांग रखी। इस अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष रमेश मैखुरी, पोखरी नगर पंचायत निवर्तमान अध्यक्ष लक्ष्मी प्रसाद पंत, व्यापार संघ अध्यक्ष बीरेंद्र राणा, उपजिलाधिकारी राजेश कुमार, अधिशासी अधिकारी बीना नेगी, धीरेंद्र राणा, कांग्रेस ब्लॉक अध्यक्ष रवींद्र नेगी, डॉ. बृजेन्द्र कठैत, गिरीश सती, श्रवण सती सहित मेलार्थी मौजूद थे।

ठेकेदार संघों ने इंजीनियरों की कार्य प्रणाली पर उठाएं सवाल

नई टिहरी : लोनिवि के ठेकेदार संघों की संयुक्त बैठक में प्रांतीय खंड लोनिवि के इंजीनियरों की कार्यप्रणाली पर रोष जाहिर किया गया। शनिवार को लोक निर्माण विभाग ठेकेदार संघ, भागीरथी ठेकेदार वेलफेयर एसोसियेशन और ठेकेदार एसोसियेशन नई टिहरी की संयुक्त बैठक जिला मुख्यालय पर रोशन सिंह चौहान एवं किशोर सिंह मंद्रवाल की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में प्रांतीय खंड लोनिवि की कार्यप्रणाली को लेकर रोष जाहिर करते हुए कई प्रस्ताव पारित कर प्रस्ताव की प्रति ईई प्रांतीय खंड लोनिवि योगेश कुमार को भी प्रेषित की। रोष जाहिर करते हुए कहा गया कि निर्माण कामों की निविदा प्रमुख प्रसारित समाचार पत्रों में प्रकाशित न कर ऐसे समाचार पत्रों में प्रकाशित की जा रही है जिनका प्रसार जनपद में शून्य है। इसलिए मांग है कि लद्यु व दीर्घ स्तर के मूल्य की निविदायें प्रमुख दैनिक समाचारों में ही प्रकाशित की जायं।

400 मीटर दौड़ में अर्णव, अस्मिता और नव्या ने मारी बाजी

चमोली : एसजीआरआर कर्णप्रयाग में वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता के 400 मीटर दौड़ में अर्णव राणा, दिव्यांशु बिष्ट व आयुष फर्स्वाण अपने वर्ग में प्रथम एवं दिव्यांशु सजवान, शिवम बिष्ट व कृष्णा देवराड़ी दूसरे तथा ईशान नवानी, हार्दिक नागवाल व दिवयांश खंडूड़ी तृतीय रहे।

बालिका वर्ग में अस्मिता और नव्या मैखुरी प्रथम एवं अनुजा खत्री और याचना रावत दूसरे तथा काव्या बिष्ट व हिमांशी तीसरे स्थान पर रहे। प्रधानाचार्य बीबी डोभाल ने बताया कि 600 मीटर दौड़ में अंशुल रावत व अंतरा जोशी अपने वर्ग में प्रथम एवं आदित्य राणा व आयशा दूसरे तथा आयुष कुंवर व हिमांशी तीसरे स्थान पर रहे। कबड्डी प्राथमिक बालक वर्ग में आर्यभट्ट सदन ने रमन सदन को तथा बालिका वर्ग में रामानुजन सदन ने रमन सदन को पराजित किया। कबड्डी जूनियर बालक वर्ग में आर्यभट्ट सदन ने रमन सदन को तथा बालिका वर्ग में भाभा सदन ने रामानुजन सदन को पराजित किया। कबड्डी सीनियर बालक वर्ग में रमन सदन ने आर्यभट्ट सदन को तथा बालिका वर्ग में रमन सदन ने भाभा सदन को पराजित किया। लंबी कूद बालक वर्ग में आरव, अनुराग पंत, सत्यम, मयंक टकोला व वैभव बिष्ट अपने वर्ग में प्रथम तथा दिव्यांशु, आदर्श डिमरी, शिवम, अर्पित डिमरी व तन्मय रावत द्वितीय एवं अंशुल, रुद्र चमोली, शिवम रावत, अंशुल रावत व अमित रावत तृतीय रहे। लंबी कूद बालिका वर्ग में अंशिका राज, याचना रावत, दिव्यांशी और संस्कृति पंवार अपने-अपने वर्ग में प्रथम तथा अरनवी कुमारी, नाव्या मैखुरी, निहारिका व गुंजन देवराड़ी द्वितीय रहे एवं अस्मिता, हिमनशी खत्री, साक्षी व रेणुका नेगी तृतीय रहे।

सोमवार को दुर्योधन वध के साथ पांडव नृत्य का होगा समापन

रुद्रप्रयाग : ओंकारेश्वर मन्दिर में आयोजित पाण्डव नृत्य के 28वें दिन पाण्डवों ने अस्त्र-शस्त्रों के साथ महादेव की तीर्थयात्रा की। इस मौके पर पाण्डव पश्वाओं को फूल माला व वस्त्र अर्पित कर स्वागत किया गया। सोमवार को दुर्योधन वध के साथ पांडव नृत्य का समापन हो जाएगा। बीते चार सप्ताह से पंचकेदार शीतकालीन गद्दीस्थल ओंकारेश्वर मंदिर परिसर में पांडव नृत्य का आयोजन हो रहा है। जिससे पूरे क्षेत्र में पांडव नृत्य की धूम मची हुई है, दूरस्थ क्षेत्रों से भक्त दर्शनों को पहुंच रहे हैं। रविवार को पैय्या डाली कौथिग का आयोजन किया जाएगा, जबकि सोमवार को दुर्योधन वध व पाण्डवों के अस्त्र*शस्त्र विसर्जित के साथ पाण्डव नृत्य का समापन होगा। शनिवार को भगवान केदारनाथ के शीतकालीन गद्दी स्थल ओंकारेश्वर मन्दिर में विद्वान आचार्यों ने पंचाग पूजन के तहत अनेक पूजाएं की गई साथ ही भगवान केदारनाथ, मद्महेश्वर देवी-देवताओं व पंच देव पाण्डवों का आह्वान किया गया। कुछ देर नृत्य करने के बाद पंच देव पाण्डव तीर्थ यात्रा के तहत भोलेश्वर महादेव तीर्थ के लिए रवाना हुए। पंच देव पाण्डव के आगमन पर स्थानीय व्यापारियों ने पुष्प से भव्य स्वागत किया।

दोपहर पंच देव पाण्डव तीर्थ यात्रा में भोलेश्वर महादेव तीर्थ पहुंचे पंच देव पाण्डवों के भोलेश्वर तीर्थ आगमन पर केदारनाथ विधायक आशा नौटियाल ने सभी पाण्डव पश्वाओं को फूल-माला व वस्त्र अर्पित कर विश्व समृद्धि की कामना करते हुए मनौती मांगी।

आचायी द्वारा तीर्थ यात्रा में अनेक पौराणिक परम्पराओं का निर्वहन किया। देर सांय पंच देव पाण्डवों ने भटवाड़ी गांव का नगर भ्रमण कर ग्रामीणों को आशीर्वाद दिया। पाण्डव नृत्य कमेटी अध्यक्ष विजय राणा ने बताया कि पाण्डव नृत्य में अनेक आध्यात्मिक व पौराणिक परम्पराओं का निर्वहन किया जा रहा है।

विद्युत कटौती से उपभोक्ता परेशान, सुधार लाने की उठाई मांग

रुद्रप्रयाग : केदाघाटी के विभिन्न गांवों में शाम ढलते ही बिजली गुल होने से उपभोक्ता काफी परेशान हैं। छात्रों के साथ ही लोगों को रात्रि में विद्युत कटौती होने से खासी दिक्कतें उठानी पड़ रही हैं। स्थानीय लोगों ने ऊर्जा निगम से विद्युत कटौती में सुधार लाने की मांग की है। बीते दो सप्ताह से केदाघाटी के लमगौंडी, देवली भणिग्राम, फली पसालत, सिंगोली, त्वारा, त्वाणी, सल्या, तुलंगा, नागजगाई, फेगू, बरम्वाड़ी, सुभदिनी, लुहैड़ा, सांग, तिनसोली सहित कई गांवों की बिजली गुल हो रही है। इतना ही नहीं जैसे ही सुबह होती है फिर बिजली गायब हो जाती है। बिजली गुल होने के चलते ग्रामीणों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। विद्युत गुल होने से जहां छात्रों को पठन पाठन में दिक्कतें उठानी पड़ रही है। वही कड़ाके की ठंड विद्युत की रोस्टिंग होने से लोग खासे परेशान हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि पूर्व में इस संबंध में ऊर्जा निगम के अधिकारियों को अवगत कराया जा चुका है, लेकिन अभी तक कोई कार्यवाही होती नहीं दिख रही है।

सीसीयू के लिए डीएम ने किया भूमि का निरीक्षण

नई टिहरी : जिलाधिकारी मयूर दीक्षित ने जिला मुख्यालय में सीसीयू (क्रिटिकल केयर यूनिट) के निर्माण के लिए जिला अस्पताल बौराड़ी के निकट भूमि चयन को लेकर स्थलीय निरीक्षण किया। सीसीयू के तहत यहां पर 50 बेड का ब्लॉक तैयार करने के साथ ही उसमें सभी अत्याधुनिक चिकित्सा उपकरणों की व्यवस्था की जानी है। शनिवार को डीएम मयूर ने क्रिटिकल केयर यूनिट के लिए निर्धारित गाइडलाइन के अनुसार जिला अस्पताल की पार्किंग स्थल के आसपास जगह का निरीक्षण कर जगह सही तरीके से चिन्हित कर इंजीनियरों को डिजाइन तैयार के निर्देश दिए। केंद्र सरकार की ओर से इस यूनिट के लिए करीब 50 करोड़ की धनराशि स्वीकृत की गई है। सीसीयू बनने से टिहरी जिले की स्वास्थ्य सेवाओं में खासा सुधार आने की उम्मीद है। भविष्य में इस यूनिट में अलग से 50 सीटें मेडिकल कॉलेज की भी संचालित किए जाने का प्रावधान है। केंद्र सरकार के मानक के अनुसार करीब 4600 वर्ग मीटर भूमि सीसीयू के लिए होनी जरूरी है। जिलाधिकारी ने सीएमओ डा. श्याम विजय से जिला चिकित्सालय में ओपीडी, औषधि, चिकित्सालय में चल रहे निर्माण व मरम्मत कार्यों की भी जानकारी ली। उन्होंने कहा कि मरीजों को चिकित्सालय में जो दवाइयां उपलब्ध न होने पर बाहर से दवाई लिखी जाती हैं, उसके बारे में संक्षिप्त में जानकारी दें। पुलिस अधिकारियों को निर्देश दिए कि अस्पताल के समीप कोई वाहन सड़क में पार्क न हो। सभी वाहनों को पार्किंग में ही खड़ा करवाना सुनिश्चित करें। इस मौके पर सीएमएस डा. अमित राय, ईई लघु सिंचाई बृजेश गुप्ता आदि मौजूद रहे।

27 दिसंबर को होगा डाक अदालत का आयोजन

नई टिहरी : डाक विभाग ग्राहकों की शिकायतों को सुनने के लिए आगामी 27 दिसंबर को अपराहन चार बजे त्रैमासिक डाक अदालत का आयोजन जिला मुख्यायल पर करेगा। यह जानकारी डाक अधीक्षक जेएस बोरा ने दी। बताया कि इस अदालत में आम लोगों और ग्राहकों की शिकायतें सुनने के साथ ही आवश्यकताओं व अनुभवों को भी साझा किया जायेगा।

राज्यपाल गुरमीत सिंह ने किया राष्ट्रीय सैनिक संस्था के 17वें राष्ट्रीय सम्मेलन में मुख्य अतिथि के स्प में प्रतिभाग

देहरादून। राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से नि) ने शनिवार को गाजियाबाद में आयोजित राष्ट्रीय सैनिक संस्था के 17वें राष्ट्रीय सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में प्रतिभाग किया। इस अवसर पर राज्यपाल ने वीर शहीदों के परिवारजनों और वीरांगनाओं को सम्मानित किया। राज्यपाल ने कहा कि राष्ट्रीय सैनिक संस्था वीर सैनिकों और राष्ट्रभक्त नागरिकों के साथ व्यक्तिगत और चरित्र निर्माण के क्षेत्र में कार्य कर रही है। राष्ट्रीय एकीकरण एवं चरित्र निर्माण कार्यक्रम इसका उदाहरण है। इस परिवार को हमारे हजारों देशभक्त नागरिकों और वीर सैनिकों ने स्वयं समर्पित भावना से बनाया है, इस परिवार का सदस्य होना हर एक के लिए गौरव की

बात है। राज्यपाल ने राष्ट्रीय सैनिक संस्था द्वारा समाज से बुराइयों के उन्मूलन, शहीदों के परिवारों के कल्याण और पूर्व सैनिकों के सशक्तीकरण के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि यह संस्था गौरव सेनानियों और देशभक्त नागरिकों को एकता के सूत्र में बांधकर राष्ट्र प्रथम की भावना को मजबूती प्रदान कर रही है। राज्यपाल ने समाज से नशे और ड्रग्स जैसी बुराइयों को मिटाने, शिक्षा के माध्यम से नैतिक मूल्यों का विकास करने और राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने के लिए सभी नागरिकों से अपील की। उन्होंने कहा कि विविधता में एकता ही भारत की सबसे बड़ी ताकत है, और हमें एकजुट होकर आत्मनिर्भर और विकसित भारत के निर्माण में योगदान देना चाहिए। इस अवसर पर संस्था के अध्यक्ष कर्नल टी.पी. त्यागी (रि.) सहित संस्था के पदाधिकारी एवं अनेक गौरव सेनानी उपस्थित रहे।

उत्तराखंड की ब्रह्म कमल टोपी रायपुर छत्तीसगढ़ में छाई

देहरादून। पब्लिक रिलेशंस सोसाइटी ऑफ इंडिया (पीआरएसआई), देहरादून चैप्टर ने रायपुर में छत्तीसगढ़ के उपमुख्यमंत्री विजय शर्मा का सम्मान किया। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री को केदारनाथ का प्रतीक चिन्ह, ब्रह्मकमल की टोपी, और उत्तराखंड के विकास पर आधारित पुस्तिका भेंट की गई। छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में 20 से 23 दिसंबर तक पीआरएसआई का राष्ट्रीय अधिवेशन आयोजित किया जा रहा है। देहरादून चैप्टर के सदस्य भी इस अधिवेशन में प्रतिभाग कर रहे हैं। पीआरएसआई देहरादून चैप्टर के अध्यक्ष रवि बिजारणियां, सचिव अनिल सती, कोषाध्यक्ष सुरेश भट्ट, उपाध्यक्ष एएम त्रिपाठी ने उप मुख्यमंत्री का अभिनंदन किया। उन्हें बताया गया कि उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की पहल पर उत्तराखंड के चार धाम के शीतकालीन प्रवास स्थलों के लिए शीतकालीन यात्रा शुरू की गई है। छत्तीसगढ़ के उप मुख्यमंत्री को उत्तराखंड में शीतकालीन यात्रा के लिए आमंत्रित किया।

कार्यक्रम में उत्तराखंड के विकास कार्यों पर आधारित फिल्म का प्रदर्शन भी किया गया। साथ ही उत्तराखंड के सूचना विभाग की ओर से प्रकाशित विकास पुस्तिका संकल्प सतत विकास का वितरित की गई।

इस अवसर पर पीआरएसआई के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अजीत पाठक, पीआरएसआई देहरादून के सदस्य वैभव गोयल, अनिल वर्मा, अजय डबराल, महेश, दीपक कुमार, ईशान, काजल उपस्थित थे।

जयन्त
संस्थापक
स्व.नरेन्द्र उनियाल
प्रकाशक,मुद्रक और स्वामी
नागेन्द्र उनियाल द्वारा प्रतिभा प्रेस से मुद्रित तथा बद्रीनाथ मार्ग कोटद्वार (गढ़वाल) से प्रकाशित
–सम्पादक
नागेन्द्र उनियाल
आर.एन.आई. 35469/79
फोन/फैक्स 01382–222383
मो. 8445596074, 9412081969
e-mail:
nagendra.uniyal@gmail.com